SHREE SWAMINARAYAN
શ્રી સ્વામિનારાયણ

DECEMBER 2005

સુરેન્દ્રનગર મંદિર મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ

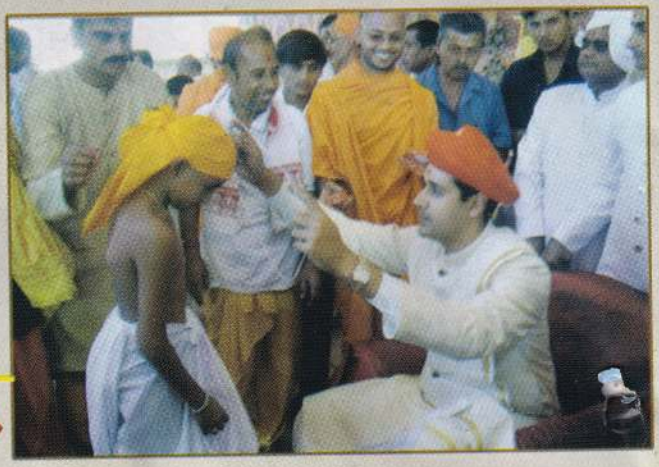




પ્રકાશકઃ- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧



सुरेन्द्रनगर मंदिर में विराजमान श्री नरनारायणदेव, बाल स्वरूप घनश्याम महाराज, श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज ।



सुरेन्द्रनगर मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर विप्र बटुकों को यज्ञोपवित प.पू. आचार्य महाराजश्री देते हुए ।



सुरेन्द्रनगर मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर आशीर्वचन देते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।



सुरेन्द्रनगर मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर सभा में कथा श्रवण करते हुए हरिभक्त ।



सुरेन्द्रनगर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर यजमान प.भ. खीमजीभाई पटेल (मेडा) परिवार को श्रीहरि के तीनो अपर स्वरूप आशीर्वाद देते हुए ।



सुरेन्द्रनगर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर यजमान श्री प्रशांतभाई धोळकिया प.पू. आचार्य महाराजश्री को हार पहनाकर आशीर्वाद लेते हुए ।

श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान का मुखपत्र

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ४ डिसम्बर -२००५



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें-

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	वचनामृत ग.प्र. ४ का सारांश	५
४.	सुरेन्द्रनगर मंदिर का इतिहास	६
५.	श्री नरनारायदेवने अनंत ऐश्वर्य दिखाया	७
६.	सच्चा सुख सत्संग के अपनेपन में हैं	८
७.	सत्संग महिमा	९
८.	रसनेन्द्रिय को जीतना	१४
९.	परोपकार	१५
१०.	सत्संग बालवाटिका	१७
	(१) नित्य याद रखने योग्य बात	
	(२) दया धन की मूल है	
११.	समाचार वृत्तांत	२०

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मदीयम्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

जीव मात्र को सुख की खोज में ही संपूर्ण जीवन बीत जाता है । फिर भी सच्चा सुख नहीं मिलता । मृगजल की तरह नाशवंत पंचविषय के सुख के पीछे दौड़ने में ही समंग्र जीवन का समय पूर्ण हो जाता है । बाद मे जन्म-मरण का चक्कर चालू ही रहता है । इसलिए शास्त्रों का तथा संत पुस्योका साहचर्य करना चाहिए, क्योंकि सत्यमार्ग बताने में ये दोनो ही समर्थ हैं । परमकृपालु परमेश्वर की प्राप्ति के सिवाय धन-दौलत, माल, मिलकत या वैभव यह सब मिथ्या, झूठा है इससे परमेश्वर की प्राप्ति संभव नहीं है । अनेक प्रकार के सत्कर्म या पुण्यकर्म से भी भगवान मिलते नहीं हैं । इससे तो जीव को स्वर्ग लोग या देव लोक की प्राप्ति होती है । जो पुण्य फल के पूर्ण होने पर पुनः मर्त्यलोक के जन्म-मृत्यु के फेरे में आना पडता है । भगवान की प्रेम लक्षणा भक्ति ही एकमात्र यह उपाय है जो जीव को परम सुख तथा शांति प्राप्त करा सकती है । जो कभी नाश न हो ऐसी भक्ति करने का अवसर आवे तो उसे ही हम उत्सव कहते हैं तथा ऐसे पवित्र उत्सव के समय में लोक व्यवहार को छोड़ना ही श्रेष्ठ कार्य है । इसी लिए धन राशि में सूर्य का आगमन हो तब प्रातःकाल भगवान का स्मरण करने से जो प्रभु में प्रेमलक्षणा भक्ति होती है वह अन्य उपाय से संभव नहीं है । इसीलिए अपने मंदिरो में धनुर्मास प्रारंभ होता है । उन दिनों ब्राह्ममूहुर्त में ही भगवान के नाम की उच्चस्वर से धुनि की जाती है । जिससे परमात्मा का अनुसन्धान करने से सांसारिक नाशवंत पंच विषयों का विस्मरण हो और साधन सुख राशि ऐसे भगवान के स्वस्य में जीव की वृत्ति लगजाय तो अक्षरधाम की प्राप्ति होती है । इसलिये प्रिय भक्तों ! १६ दिसम्बर से प्रारंभ होने वाले धनुर्मास में तन, मन, धन से भगवान की भक्ति में लगजायेंगे तो श्रीजी महाराज की अपार प्रसन्नता प्राप्त होगी । इसके साथ अक्षरधाम की प्राप्ति करावे ऐसी सर्वोपरि धुनि स्वामिनारायण भगवानने इस पृथ्वी सर्वप्रथम जिन परमात्मा श्री नरनारायणदेव को अपनी बांहो में भरकर प्रतिष्ठित किये थे । उन्ही के सांनिध्य में तथा धर्मकुल की निश्रा में सम्पूर्ण मास चलेगी । यह दिव्य लाभ समग्र ब्रह्मांड में भी मिलना दुर्लभ है । इसलिये प्रत्येक हरिभक्त धुनि करें और दूसरे से करावें इसी में श्रीजी महाराज की प्रसन्नता है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

नवम्बर-२००५

६. श्री स्वामिनारायण मंदरि कांकरिया बालस्वस्म कष्टभंजन देव के अभिषेक प्रसंग पर तथा हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण ।
प.भ. काछिया हरिभक्त के यहाँ पदार्पण । प.भ. सुरजितसिंह एम. पुरी के यहाँ पदार्पण, मणीनगर ।
७. से ९. कच्छ-भुज तथा मांडवी श्री स्वामिनाारय़ण मंदिर, पदार्पण ।
१०. पंड़रपुर गाँव में प.भ. लालजीभाई महादेवभाई के यहाँ पदार्पण ।
११. सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर आयोजित पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
१२. प.भ. डॉ. हर्षदभाई झिंझुवाडिया के "धर्मराज ज्वेलर्स" में पदार्पण, नवरंगपुरा ।
वडताल श्री स्वामिनारायण मंदिर शोभायात्रा प्रसंग में पदार्पण ।
संत महादीक्षा अपने हाथों से दिये ।
१३. स.गु. देवानंद स्वामी के जन्म स्थान बळोल भास (मूलीदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर में (स्त्री-पुस्म) के लिए मूर्ति प्रतिष्ठा स्व हाथों से धूमधाम से सम्पन्न किये ।
स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा तुलसी विवाह प्रसंग पर पदार्पण ।
१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में पदार्पण ।
प.भ. हसमुखभाई रतीलाल ठक्कर के यहा ँ पदार्पण अहमदाबाद ।
१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर शोभायात्रा में पदार्पण ।
१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर शिखरबद्ध नवनिर्मित मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा स्व हाथों से किये ।
१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर महुन्द्रा (जि. गांधीनगर) मूर्ति प्रतिष्ठा स्व हाथों से किये ।
१९. अंबापुर (गांधीनगर) प.भ. जितुबा पटेल के यहाँ पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
२०. अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.भ. बाबुभाई मणीलाल शाह परिवार द्वारा आयोजित पारायण की पूर्णाहुति स्वहाथों से किये ।
श्री उमिया होस्पिटल के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, राणीप ।
२१. आनंदपुरा (ता. कडी) गाँव में प.भ. हरिवल्लभभाई डाह्याभाई पटेल के यहाँ पदार्पण ।
२२. श्री स्वामिनारायण मंदिर वावोल (तरपोझ) पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
२३. अंबाला (ता. जोडीया) गाँव में प.भ. केशुभाई रुडजीभाई चौहाण के यहाँ पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर कठलाल प्रसादी की छत्री में चरणारविन्द प्रतिष्ठित करने के अवशर पर पदार्पण ।
२७. संत महादीक्षा विधि अपने हाथों से सम्पन्न किये ।

सत्संगी मात्र को दान भेंट नियमित भरने के संदर्भ में

सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने सप्रदाय को अमूल्य ग्रन्थ शिक्षापत्री श्लो. १४७ के अनुसार आज्ञा की है कि प्रत्येक आश्रित जन अपने आवक का दशवां भाग या जो कमजोर हों वे हरिभक्त वीसवांभाग दान भेंट निकाल कर अपने जीवन का व्यवहार करें । जो हरिभक्त जिस देश में रहते हों वे उसी देश के मंदिर में दान भेंट को देकर रसीद प्राप्त करले, इसके साथ अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य का नाम लिखा कर भेंट के साथ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद की कोठार ओफिस में भर कर पहुंच अवश्य प्राप्त करले ।

विशेष सूचना : श्रीजी महाराज की आज्ञा अनुसार प्रत्येक हरिभक्त दान भेंट की धनराशी अन्यत्र किसी भी संस्था में न दे, इसका ध्यान रखें ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

"श्री स्वामिनारायण म्युजियम" का निर्माण कार्य सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के दिव्य मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से निवृत्ताचार्य महाराजश्री के कुशल मंगल सांनिध्य में प्रगति के मार्ग पर बढ रहा है । दाताओं के सौजन्य से म्युजियम का सं. २००६ के नये वर्ष का आकर्षक कलन्डर बडी संख्या में छप गया है । जिसका नि:शुक्ल वितरण भी देश-विदेश में अपने संप्रदाय में हो रहा है ।

प.पू. बड़े महाराजश्री की विदेश यात्रा में वहाँ नूतन मंदिरो के निर्माण कार्य होते हुए भी अमेरिका तथा इन्लेंड (यु.के.) के सत्संगी हरिभक्तों ने अति उत्साह से म्युजियम के लिए उदारभाव से सेवा की है । हरिभक्तों द्वारा अंकित की गयी सेवा जल्दी एकत्रित हो सके इसके लिए बड़े महाराजश्री ने स्थानिक हरिभक्तों की एक समिति बनाई है । जिसमें कुछ धनराशी जमा भी हो गयी है ।

प.पू. बडे महाराजश्री "म्युजियम" की आफिस में कार्यरत रहते हैं (प्रात: ९ से ११-३०) उस समय स्थानिक या बाहर के हरिभक्त स्थल पर स्वयं अपनी सेवा दर्ज कराकर अपनी शक्ति के अनुसार योगदान कर सकते हैं ।

इस समय जहाँ-जहाँ प.पू. बडे महाराजश्री हरिभक्तों के विशेषाग्रह पर थोड़े समय के लिए भी पदार्पण करते हैं तो वहाँ म्युजियम के लिए ही सेवा कार्य का ध्यान रखते हैं, जिससे अलग-अलग गाँव में जहाँ भी प्रसादीकी वस्तु मिलती है उसे म्युजियम के लिए लाया जाता है ।

श्रीजी महाराज का इस दिव्य सत्संग द्वारा ही प.पू. बडे महाराजश्री के दिव्य संकल्प का स्वप्न करीब तीस करोड रुपये के खर्च से अति नव्य भव्य सुंदर म्युजियम संनिकट भविष्य में साकार लेरहा है जो सत्संग के लिए समर्पित होगा ।

संकलन : प.भ. संदीप चोकसी

वचनामृत ग.प्र. ५ का सारांश

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

यदि ईर्ष्या करना हो तो नारदजैसी करनी चाहिए । तुंबरु गान विद्या में अति प्रवीण थे । नारद को हुआ कि मैं भी गान विद्या में क्यों न प्रवीण बनूं । अंत में वे साधना किये और परम सिद्धि को प्राप्त किये । इस घटना को श्रीजी महाराजने वचनामृत में बडी सुंदर रीति से समझाया है । भगवान के भक्त को आपस में ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए । ईर्ष्या यदि करनी ही हो तो नारद जैसी करनी चाहिए । एकबार नारदजी तथा तुंबरु वैकुंठ में लक्ष्मीनारायण के समक्ष गान किये । भक्ति रस में इस प्रकार तरबोर सभी हो गये कि स्वभान को भूल गये । इससे लक्ष्मीनारायण तुंबरु पर प्रसन्न होकर वस्त्रालंकार भेंट में दिये । यह देखकर नारदजी को तुंबरु पर ईर्ष्या आयी कि मैं तुंबरु की तरह गान विद्या सीखकर भगवान को प्राप्त करुँगा । गान विद्या सीख कर नारदजी पुनः भगवान के पास आये और भगवान के समक्ष गान विद्या किये ।

भगवान ने कहा ? हे मुनिवर्य ! आपको तुंबरु की तरह गाने नही आता हैं । नारदजी वहाँ से चल दिये और भगवान शिव को प्रसन्न करके विद्या प्राप्त किये । नारदजी को हुआ कि तप मात्र विशुद्धि का मार्ग ही नहीं हैं अपितु सिद्धि का भी मार्ग है । तप तथा संयम द्वारा होने वाले सभी कार्य सिद्धि दायक होते हैं । तप के विना मोहमाया नहीं छूटती । तप करने वाला देह से कृश होता है लेकिन भाव से पुष्ट होता है इसी लिए कहा है कि -

तन पवित्र सेवा किये,
धन पवित्र कर दान ।
मन पवित्र हरिभजन करे,
होत विध कल्यान ॥

इन तीन चीजों की न्यूनता या आधिक्य दोनो ही हानिकारक समझना चाहिए ।

१. जानकारी थोडी बोले ज्यादा ।
२. धन थोडा हो खर्च अधिक हो ।
३. योग्यता कम "अहं" अधिक हो ।

शिवजी को प्रसन्न करके गान विद्या शीख कर भगवान के आगे गान गिये । फिर भी भगवान प्रसन्न नही हुए । इस प्रकार सात मन्वन्तर तक भगवान के सामने गाते रहे । फिर भी भगवान प्रसन्न नहीं हुए । तब तुंबरु के पास तथा रुक्मिणीजी आदि आठ पटराणियो के पास गान विद्या सीखे बाद में भगवान श्रीकृष्ण के समक्ष गान किये । तब भगवान प्रसन्न हुए जिससे अपना वस्त्रालंकार नारदजी को भेंट में दे दिये ।

इसके बाद नारदजी तुंबरुके साथ ईर्ष्या नहीं किये । तात्पर्य यह है कि ईर्ष्या यदि करनी हो तो कैसी करनी चारिए तो जैसा गुण ग्रहण करना हो उसे ग्रहण करे और स्वअवगुण का परित्याग करदे । ईर्ष्या से ही भगवान के भक्त का द्रोह होता है । इसलिए भगवान के भक्त को चाहिए कि सभी प्रकार से ईर्ष्या का त्याग करे ।

प्रस्तुत वचनामृत का रहस्य यह है कि "जो नम्र होता है वह सभी को प्रिय होता है" इसलिए निर्माणी होकर गुणवान के पास से गुण ग्रहण करना चाहिए । योग्य को अवश्य नमस्कार करना चाहिए, नमस्कार में बहुत गुण हैं । गुण ग्राही बनकर गुण ही नहीं लेना चाहिए बल्कि गुणवान का या भगवान के भक्त का कभी द्रोह नही करना चाहिए, उनसे कभी ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए ।

यथार्थ ईर्ष्यावाला कभी किसी के बडप्पन को नहीं देख सकता । (सा. ८)

नारदजी ने आठपटरानियों से यही शिक्षाप्राप्त की कि कभी आत्म श्लाघा नहीं करनी चाहिए । "स्व श्लाघा स्वमुखेन च" अपने मुख से कभी

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १६

सुरेन्द्रनगर मंदिर का इतिहास

- शैलेन्द्रसिंहजी झाला (सुरेन्द्रनगर)

गुजरात राज्य के झालावाड प्रांत का बडा स्थान अर्थात् सुरेन्द्रनगर । भगवानश्री स्वामिनारायण महाप्रभु ने यह झालावाड प्रांत पसंद किया था । परिणाम स्वस्प मूली के नरेश रामाभाई राजा की ईच्छा के अनुसार मूली में अपने हाथों से मंदिर निर्माण करके श्री राधाकृष्णदेव को प्रतिष्ठित किया । थोडे समय के बाद बढवाण के ठाकुर साहबने वढवाण के हृदय समान मुख्य मार्ग पर ४००० चौ.मी. जमीन मूली श्री राधाकृष्णदेव को कृष्णार्पण की थी । इसी स्थल पर मूली के तत्कालीन महंत स्वामी स.गु. हरिनारायणदासजी ने खूब परीश्रम करके करीब २०० जितने मकानका निर्माण कार्यकरवाया था । एक मंदिर पुस्त्रों के लिए तथा एक मंदिर महिलाओं के लिए बनवाया था । समय बीतने के साथ इस मंदिर का सत्संग उत्तरोत्तर बढता गया और मंदिर का स्थान छोटा लगने लगा । उस समय के बहनों के मंदिर में सेवा पूजा करने वाली सांख्ययोगी धोणी बां को विचार आया कि इसका विस्तार करना चाहिए, इस हेतु से बगल की जगह को लेकर बडा शिखरी मंदिर बनाने का प्रस्ताव प.पू. आचार्य महाराजश्री के उस समय के कार्यपालक जयंतीभाई कालीदास परीख तथा सुरेन्द्रनगर के बडे हरीभक्तों को कहा तो वे लोग भी संमत हो गये । उसी समय जयंतीभाई आदि हरिभक्त प.पू. बडे महाराजश्री के पास आये सम्पूर्ण स्थित बताये । प.पू. बडे महाराजश्री प्रसंग पर थोडे समय के बाद सुरेन्द्रनगर गये हुए थे, उस जगहको देखा और तुरंत ही उनके मन में आ गया कि यहाँ तीन शिखर का बडा मंदिर बनना चाहिए।

पू. महाराजश्री का संकल्प अर्थात् - श्रीजी महाराज का विचार इसमें कोई फर्क है ही नहीं । पू. बडे महाराजश्री ने तुरंत उस समय के महंत स्वामी प्रेमजीवनदास को मंदिर निर्माण की आज्ञा करदी । महंत स्वामी तथा उनके शिष्यों ने मंदिर निर्माण की इस आज्ञा को आंखो पर चढा लिया । स्वामी जब यहाँ महंत पद पर आये तो धीरे धीरे अपने व्यवहार से तथा कुशलता से भाडे वालों से मकान खाली करा दिया । मंदिर के पीछे ही सरकार की जगह थी, वहाँ होस्पिटल भी था । उसी में कर्मचारी आवास भी था । स्वामीने सरकार के पास से इस जगह को मांगा और श्रीजी महाराज का संकल्प था तो ऐसे संत का पुस्त्रार्थ कैसे व्यर्थ जाता । सरकार ने इस जमीन को १५ लाख स्पये तथा ४४८ चो.मी. के अुसार मूली श्री स्वामिनाारयण मंदिर के नाम कर दिया । समय बीतते वहाँ पांच शिखर का विशाल मंदिर का निर्माण हो गया । यह मंदिर अहमदाबाद देशका एक अद्भुत मंदिर बन गया । जिसकी नक्काशी, निर्माणकार्य, शिल्प शास्त्र के अनुसार है । इसका शिखर बेनमून तैयार हुआ । कलात्मक ढंग से इस मंदिर की अपनी अलौकिकता है । बाद में स्वामी को हुआ कि हरिभक्तों के भोजनालय की व्यवस्था का अभी भी अभाव है । पुनः सरकार के पास बगल की जगह की मांग किया । भगवानकी कृपा से वह जमीन भी मिल गयी । वहाँ अद्यतन ब्रह्मानंद भोजनालय, ब्रह्मानदं सभा मंडप, संतो का निवास स्थान, भावुक हरिभक्तो का निवास स्थान बनाया गया । सम्पूर्ण व्यवस्था वाला यह मंदिर बनाया गया । मूली मंदिर के नीचे यह अद्भूत मंदिर निर्मित हुआ।

प.पू. महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा संत मंडल के प्रयास से यहाँ का सत्संग खूब निष्ठावाला तथा मूली श्री राधाकृष्ण देव तथा अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की गादी का वफादार यहाँ का सत्संग है ।

श्री नरनारायदेवने अनंत ऐश्वर्य दिखाया

- प्रो. सूर्यकांत भट्ट
(भुज)

अपने परमकृपालु तथा अनंत ऐश्वर्य के स्वामी श्री नरनारायणदेव की प्रत्यक्षता की अलौकिक, रहस्यप्रद, शांतिप्रद, अपने पूर्वाचार्य महाराजश्री के मुख से हम सभी को अनेकों बार सुनने को मिला है। आप जब सभा में विराजमान होकर हम सभी को श्री नरनारायणदेव के विषय में अति सरल शैली में समझाते थे उस समय कोई भी जीवात्मा यह बात टी.वी. के माध्यम से सुन रहा होगा या सभा में विराजमान होकर कथा श्रवण कर रहा होगा उनके सामने अवश्य श्री नरनारायणदेव की माधुरी मूर्ति प्रत्यक्ष दर्शन देती दिखाई देती होगी । इस दर्शन का सुख अगाध है ।

हम सभी जानते हैं कि अपने आचार्य महाराजश्री तो श्रीजी महाराज के अपर स्वस्म हैं । उन्हे तो श्रीजी महाराज सर्वत्र, सर्वकाल प्रत्यक्षता, का अनुभव कराते रहते हैं। हमारी दृष्टि दृश्य देखने में समर्थ नहीं है । पूज्य महाराजश्री जब जब श्री नरनारायणदेव का दर्शन करने पधारे हैं । तब-तब श्रीहरि स्वयं अनके कुशल क्षेम पूछते रहते हैं। अवारनवार स्वप्न में भी उन्हें मार्गदर्शन देते रहते हैं । ऐसी दिव्य बातें जानने में मिली है ।

जब जब महाराजश्री देव को पंचामृत से स्नान कराते हैं। उस समय महाराजश्री स्वयं भाव विभोर होते दिखाई देते हैं । श्रीजी महाराज के अतिमुलायम देह को अत्यंत सावधानी से पंचामृत से स्नान कराते रहते हैं। यह दृश्य अद्‌भुत होता है। अनंत ऐश्वर्यो के स्वामी श्री नरनारायणदेव के साथ की स्व अनुभूति को भी महाराजश्री अपने डायरी में लिख लेते हैं। कितनी ऐश्वर्य चमत्कारीक बातें तो मर्यादित रखनी पडती है। कितनी तो सर्वजीव हितावह के लिए होती है ।

मद्रासका एक विद्वान ब्राह्मणने पढा कि शास्त्रोक्त विधि से काष्ठ की मूर्ति, पाषाण की मूर्ति या किसी धातु की मूर्ति या चित्र प्रतिमा हो यदिउस की प्राण प्रतिष्ठा की गयी हो तो उसमे देव अखंड बिराजमान रहते हैं। मनुष्य उनका साक्षात्कार कर सकते हैं ।

इस विषय की परीक्षा करने के लिए उस ब्राह्मण ने निश्चित किया कि मुझे तीर्थाटन करना है । प्रत्येक देवों का दर्शन करना है । जो मूर्ति मुझे बुलाकर मेरे पास से पांच सौ स्मये मांगले उसे स्मये अर्पित करना है और उसी देव का आश्रित बनकर जीवन बिताना है । अनेक तीर्थो में वह ब्राह्मण घूमा । अंत में वह निराश होकर अहमदाबाद के सभी मंदिरो का दर्शन करके श्री नरनारायणदेव महाप्रभु का दर्शन करने आया और दोनो हाथ जोड़कर खडा रहा कि उसी समय श्री नरनारायणदेव उसे तीन बार बुलाकर कहे कि हे विप्र ? आप मेरे निमित्त का द्रव्य लेकर इधर-उधर कबतक घूमते रहोगे । यह द्रव्य मेरे निमित्त का है अब मुझे दे दो । इस प्रकार की अलौकिक वाणी सुनकर ब्राह्मण आश्चर्य में पड गया, और उसी सयम निश्चित कर लिया की एक मात्र भगवान श्री नरनारायणदेव ही प्रत्यक्ष महाप्रभु हैं । ऐसा उसे निश्चय हो गया । इतना ही नहीं उसी समय ठाकुजी के पास खड़े पार्षदो से इस ऐश्वर्य की वात की । पार्षद उन्हें महाराजश्री के पास ले गये । अंत में वे पंचवर्तमान धारण करके सत्संगी हो गये ।

ऐसी ही वात मारवाड देश के एक जैन बनिया की है । वह भी दो सौ पचास सोने की मुहर लेकर तीर्थो में यात्रा किया । उसे भी ऐसा ही संकल्प हुआ कि जो मूर्ति इस धन को मांगले उसी मूर्ति को अर्पण कर देंगे । उसी को भगवान मानेंगे तीर्थाटन करते हुए अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव के समक्ष आकर मुझे बुलायें तो मैं जानूं कि श्री नरनारायणदेव प्रगट परमात्मा भगवान हैं । इतना संकल्प हुआ कि तुरन्त ही श्री नरनारायणदेव ने बोला कि हे वणिक ! यह मेरे निमित्त का धन कहाँ - कहाँ कबतक लेकर भटकते रहोंगे । हमी प्रगट भगवान हैं । यह धन मेरे पास रखदो । बणिक आश्चर्य में पड़ गया और सम्पूर्ण धन देव के चरण में रखदिया । बडे संत के पास जाकर पंचवर्तमान को धारण किया । श्री नरनारायणदेव का आजभी अनेक आश्चर्यकारक ऐश्वर्य देखने में मिलता है ।

सच्चा सुख सत्संग के अपनेपन में है

- पटेल गांडाभाई मोहनलाल (कोल्हापुर)

श्रीजी महाराज गढडा के अंत्य के २०वे प्रकरण में स्वभाव किसे कहा जाता है, इस प्रश्न के उत्तर में कहते हैं कि जीव पूर्वजन्म के कर्मवश इस अवस्था को प्राप्त करके एक रसता को प्राप्त हो गया है । कर्म स्वभाव वश होकर जीव अपने कर्मफल को भोगता है । जिसे वासना या प्रकृति भी कहा जा सकता है ।

ऐसे स्वभाव को दूर करने के लिए श्रीजी महाराज कहते है कि जैसे पत्थर में से आकृति (रूप) देने के लिए कारीगर को कितना परिश्रम करतना पडता है, इसी प्रकार स्वभाव को परिवर्तित करने के लिए अधिक प्रयत्न की जरूरत होती है । स्वभाव को बदल ने के लिए आत्मनिष्ठा के साथ भगवान श्री कृष्ण की नवधाभक्ति करनी चारिए । यदि आत्मनिष्ठा भक्ति में न हो तो जैसे भगवान में प्रेम करे वैसे अन्य जगत के पदार्थों में प्रेम हो जाय तो वासना हटेगी नही, इसलिए भक्ति आत्मनिष्ठा के साथ ही करनी चाहिए जिससे स्वभाव बदलने लगे ।

गढडा मध्य प्रकरण १५ वें में श्रीजी महाराजने कहा कि जैसे बाहर अपना कोई शत्रु हो तो काम होने देता नहीं, होता काम बिगाड देता है । परिणाम स्वरूप उस शत्रु का नाश करने के लिए व्यक्ति नाना प्रकार की उपाय करता है, ठीक इसी तरह मोह रूपी मार्गमें अंत: शत्रुओं को नाश करने के लिए जो भी उपाय हो उसे करना चाहिए, जैसे संतो का आश्रय ग्रहण करना, भक्ति भजन करना, कथा-श्रवण के माध्य से सद्ज्ञान-सद्विवेकी होना इत्यादि का आश्रय करके भगवत् भक्ति परायण होना चाहिए लेकिन कभी संत में अवगुण नहीं देखना चाहिए उनके गुण ग्रहण करनाचाहिए । इसी से माया जाल टलेगा ।

स.गु. गोपालानंद स्वामी कहते हैं कि कुछ व्यक्ति में बहुत अंतर है । जैसे कि समुद्र में दो पानी की जहाज जा रही हो एक की गति अच्छी हो एक की न हो तो दोनो में दो सौ गांव का फर्क पड जाता है । इसी प्रकार जो स्वभाव को बदल दिया वह श्रीजी महाराज की प्रसन्नता प्राप्त कर लिया । जिसने स्वभाव में परिवर्तन नहीं किया वह श्रीजी महाराज की कृपा संत हो या हरिभक्त प्राप्त नहीं कर सकता ।

जिस प्रकार गाँव लोज के रामानंद आश्रम में श्री मुक्तानंद स्वामी के साथ रघुनाथ स्वामी तथा अन्य संत भी रहते थे । दोनो रामानंद स्वामी के शिष्य थे । परंतु दोनो का श्रीजी महाराज के प्रति भाव अलग-अलग था । मुक्तानंदजी का भाव महाराज के अनुकुल था । उनमें श्रद्धा थी । महाराज की आज्ञा में रहने से वे संप्रदाय में "सत्संग की मा" के रूप में प्रतिष्ठित हुए । दूसरे रघुनाथजी की श्रीजी महाराज में प्रेम-निष्ठा नहीं थी, श्रद्धा नहीं थी । स्वभाव से प्रतिकूल रहते थे, परिणामत: संप्रदाय से विमुख हो गये । मुक्ति के मार्ग से च्युत हो गये ।

स्वभाव की परम्परा में दूसरा उदाहरण यह है कि गढडा में श्रीजी महाराज को जीवा खाचर ने पूछा कि महाराज आप प्रतिदिन दादा..... दादा..... मेरे दादा ऐसे कहते हुए दादा खाचर की खूब प्रसंशा करते है, तथा हम तो आप की इतनी देख रेख रखते हैं तो भी आप मुझे नहीं पूछते ऐसा क्यों ? तब महाराजने कहा "कभी समय आयेगा तो कहेंगे । इसके बात तो यह बात भूल गयी । वर्षा का समय आ गया । उस समय महाराज काठी दरबारों को साथ लेकर घेला नदी में स्नान करने गये । उस समय खूब तेजी से बरसात पड़ने लगा । सभी स्नान करके वापस आ रहे थे रास्ते में एक राही चुल्हा जला रहा था, लेकिन बहुत प्रयत्न करने पर भी वह जला नहीं पाया, यह देखकर श्रीजी महाराज को बहुत दु:ख हुआ । बगल में जीवा खाचर चल रहे थे ।

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १३

सत्संग महिमा

- गोरधनभाई वी. सीतापरा
(हीरावाडी-बापुनगर)

जगत में असंख्य लोग मंदिरो में भगवान का दर्शन करते हैं । संत महात्माओं के मुख से कथा वार्ता सुनते हैं । शास्त्र वांचते हैं । कुछ अंश में धर्माचरण भी करते हैं । भक्ति भी करते हैं । परंतु इस ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई उस समय से स्वामिनारायण संप्रदाय की स्थापना तक कोई भक्त सत्संगी के स्प में नहीं जाना गया । परंतु स्वामिनारायण भगवानने प्रगट होकर इतना जादू तो अवश्य किया कि इस संप्रदाय में कोई भी मुमुक्षु प्रवेश करे तथा भगवान स्वामिनारायण द्वारा रचित शिक्षापत्री के आज्ञानुसार आचरण करने लगे तो वह व्यक्ति जगत में सत्संगी के स्प में पहचाना जाता है । इतना ही नहीं स्वयं स्वामिनारायण भगवानने भी अपने आश्रित सत्संगी का कल्याण करने के लिए संकल्प किया है जो प्रत्यक्ष समाज में दृष्ट हो रहा है।

श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित इस सत्संग में देव, आचार्च, संत, शास्त्र के स्प में महाराज हर समय इस सत्संग में प्रगट रहते हैं । देव-आचार्य, संत तथा शास्त्र की व्याख्या भी महाराज ने अपने शास्त्रो में की है। जिसे सभी सत्संगी को जानना चाहिए । विना जानकारी के भी संग करने वाले को धीरे-धीरे सत्संग का रंग लग जाता है । कालुपुर मंदिर के भूतपूर्व महंत शा. पी.पी. स्वामी के शब्दों में कहा जाय तो डुप्लीकेट की संगति करने से अपनी गति भी उल्टी हो जाती है । सत्संग का मतलब सच्चे की संगति । 'सत्संग अर्थात् सत्य का संग, सत्संग अर्थात् परमात्मा, सत्पुस्प, सत्शास्त्र, सद्धर्म का संग । जीवन कल्याण के लिए सत्संग जैसा कोई साधन नहीं है । इसलिए महाराज ने सभाओं में, सत्शास्त्रों में इनचारों की खूब महिमा बताई है । आधारानंद स्वामीने श्रीहरि चरित्रामृत सागर ग्रंथमें जो वात कंही है उसका चिंतन सभी को अवश्य करना चाहिए । जिस में स्वामीने "स्वामिनारायण सत्संग" के विषय में जो लिखा है उनका वांचन करने से ख्याल आयेगा ।

तन धनादिक जो इस जन्म में मिला है, दूसरे जन्म में भी मिलेगा लेकिन ऐसा सत्संग कभी नहीं मिलेगा । कोटि सूर्य समान सत्संग की शोभा है । इसमें अधर्मस्मी उलूक को दिखाई नहीं देता । कोटिवार मस्तक चलाजाय तथा सम्पूर्ण ब्रह्मांड का राज्य चला जाय फिर भी सत्संग के सामने छोटा है । भवसागर फिरते फिरते कितने जन्म बीत गये, कितने दुःख देखे, अब सत्संग स्मी किनारेको प्राप्त कर के सावधान होजाना चाहिए ।

तीर्थ, जप, तप, करने से भी भव पार नहीं होता है । छूटने का एक ही मार्ग है । "सत्संग" । इसके विना कोटि उपाय करने पर भी ब्रह्मलोक तक नही पहुँचा जासकता है । सर्वत्र काल का ही जोर है । सत्संग करने से भव बन्धन अपने आप धीरे-धीरे छूटने लगता है ।

सत्संग का प्रताप देखकर ब्रह्मादिक देव भी आश्चर्य युक्त हो जाते है । अंग्रेज भी कहते कि "सत्संग जैसा कोई नहीं है "। हमे भी सत्संग अच्छा लगता है । जो सत्संग करते हैं वे ही मनुष्य है । सत्संग नेत्र के समान है - मार्ग दर्शक है । नेत्र, कान, नाक इत्यादि सभी का आभूषण स्प है सत्संग । सत्संग विना तीर्थ, व्रतादिक उपाय भी अधूरा है । वेदपुराणादिक ग्रन्थ का पढना भी जगत की चतुराई भले सिखायेगा लेकिन सत्संग के विना सबव्यर्थ है । सत्संग विना श्रीहरि के अलौकिक सुख की वात जानना संभव नहीं है । कुटुंब तथा देह में जैसे प्रीति है ऐसी प्रीति सत्संग में भी होनी चाहिए । तभी जगत जीता जा सकता है । कुटुंब तथा देह को जो मिथ्या समझता है उसके सत्संग में विघ्न नहीं आता है । संत तथा हरिभक्त हंस है, सत्संग मान सरोवर है । इसमें हरिचरित्र मोती है । इसी का रातदिन चयन करना चाहिए ऐसा श्रीहरि कहते । ब्रह्मांड में कही

भी सार सत्संग के विना नहीं है । सत्संग का जो नियम है वह मोक्ष देने वाला है । नियम के स्प में ही श्रीहरि सभी के पास रहते है । सत्संग करने में लेश मात्र भी दु:ख नहीं है । जगत के कष्ट को विचारे तो सत्संग करने में विलम्ब नहीं होगा । सत्संग करने से धन, तन, कुटुम्ब सभी समृद्ध होता है, तथापि इन सभी से सत्संग दुर्लभ है । सच्चे सत्संगी भाई-बहन सत्संग के विना अन्य व्यवहार जहर के समान मानते हैं । हरि संबन्धी संकल्प को ब्रह्म विद्या के समान मानते है ।

इस समय जिसे सत्संग मिला है उन्हे अमूल्य अवशर प्राप्त हुआ है । सत्संग विना चतुर मानव भी शून्य है । संसार में गमनागमन विना सत्संग के छूट सकता नहीं है । सत्सगं में मन निर्मल होता है जिससे अंत:करण शुद्ध होता है । जिसमें प्रकाश होता है वहीं पर श्रीहरि का दर्शन होना सन्भव है । सत्संग में रहकर जो सेवा करते हैं वे धाम के अधिकारी होते है । महाराज कहते - हमारा तो अक्षरधाम है वहाँ का हम वर्णन करे तो हमारा मन यहाँ रह सकता नहीं । लेकिन इस सत्संग में बड़े - बड़े भक्त हैं जिनके लिये हम इसी सत्संग में प्रत्यक्ष स्प विराजमान रहते हैं । सत्संग कल्पवृक्ष के समान है । इस में जैसी चाहना होगी वैसा ही सुख-दु:ख प्राप्त होगा । सत्संग का यही फल है कि संत-हरिभक्तों में एक दूसरे के प्रतिभाव रहे जिससे नित्य प्रति बढता रहे । सत्संग के विना अज्ञान दूर नहीं होता । सत्संग करने से अहं नही आता । सत्संग का अभ्यास करने से दृढता आती है । जन्म-मरण का चक्कर समाप्त हो जाता है । विवेकमात्र सत्संग से प्राप्त होता है । विवेक विना मोह कभी टलता नहीं है । मोह टले विना कुसंग टलता नहीं है । कुसुंग हो तो काम क्रोधादिक अधर्म का निवास होता है ।

जब जगत में श्रीहरि का अवतार होता है तो वे सत्संग स्पी बाग का निर्माण करते हैं । जिसमें मोक्षस्पी विविध वृक्ष है और संत स्पी माली है । जो ज्ञानस्पी जल देकर पोषण करते हैं । वेश्या का नाम लेने से दोष लगता है लेकिन पिंगला का नाम लेने से मंगल होता है । अजामिल का भी उद्धार हुआ । यही सत्संग का चमत्कार है । यह विना सत्संग के समझा जा सकता नहीं है । सत्संग में श्रीहरि ने अपने सामर्थ्य से नियमस्पी वज्र का कोट बनाकर अधर्म के द्वार को बन्द कर दिया है । निष्काम धर्म को बढाया है । दु:ख आने पर भी जो सत्संग नहीं छोडते उनकी श्रीहरि रक्षा करते है, उन्ही पर श्रीहरि की अमित कृपा वरसती रहती है ।

श्रीहरि कहते - प्रवृत्ति अच्छी नहीं लगती, परन्तु जब शिव के वचन सुनें तो सत्संग छोड़ नहीं सकते ।

सत्संग की सेवा ध्यान-तप की अपेक्षा अधिक है । कोटि वरस ते तप ध्यान का जो फल वह एक दिन सत्संग की सेवा में संभव है । रामानंद स्वामीने हमें वचन स्पी डोरी से बांध दिया है और सभी साधनो से उत्तम सत्संग को बताया है । इसके अलांवा रस को छोड़कर गुढली चाटने की बात है । सत्संग से मनोवांछित फल प्राप्त होता है । लेकिन धैर्य का त्याग दु:ख का कारण है । सत्संग से भगवान की अपरिमित महिमा जाना जा सकता है । जो सत्संग करता है वह वडभागी है । बड़े - बड़े यज्ञ, तप, करोडो तीर्थ भी सत्संग की बराबरी नहीं कर सकते हैं । शिव-ब्रह्मा भी सत्संग की चाहना करते हैं । इस लिये विषम परिस्थिति में भी सत्संग त्यागना नहीं चाहिए । अनेकबार इन्द्र-ब्रह्मा की देह मिली होगी - लेकिन सत्संग नहीं मिला । जैसी सत्संगति वैसा ही गुण धर्म । जगत में अधिक दु:ख देखकर दीनता नहीं आने देना चाहिए । क्योंकि सत्संग में सब कुछ भरा हुआ है । धर्म, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य का संपादन करना ही सत्संग है । यही सब सत्य है । भगवान तथा भगवान के चरित्र भी सत्य है । श्रीहरि के साथ किया गया संबन्ध भी सत्य है इसी को सत्संग कहते हैं ।

सत्संग के विना मोहस्पी अज्ञान का नाश नहीं होता है । सत्संग की

महिमा का पार नहीं है । अमायिक पदार्थ मात्र सत्संग में है । जिससे मोक्ष संभव है । वही मायिक सम्बन्ध वाले को दिखाई नहीं देता । सत्संग चिंतामणी के समान है । जिसे जैसा फल चाहिए वह देता है ।

सत्संग स्मी पुर में भगवान का अवतार होता है । भगवान का चरित्र, तीर्थ, व्रत, यह सभी सत्संग से मिलता है । सत्संग स्मी नाव में बैठकर भवसागर पारकिया जा सकता है । परलोक में कोई सहायता करता नहीं है । इस लिए यहीं पर सत्संग करके मोक्ष का अधिकारी बनना चाहिए । अन्यथा पीछे से पछताना पडेगा । सत्संग में जब तक मन नहीं होगा तब तक नाम मात्र के सत्संगी कहलायेगें सत्संग में बालक हो तो भी उसका जन्म-मरण का बन्धन कट जायेगा । काल-माया उसका कुछ विगाड पायेगी नहीं । सत्संग के विना मोक्ष स्मी गुण नहीं प्राप्त होता । अपार साधन करे लेकिन सत्संग नहीं करे तो उसकी बुद्धि निर्मल नहीं होती । इसलिए निष्कपट होकर तन-मन-धन से सत्संग करके परमात्मा की शरण स्वीकारना ही इस जन्म का लक्ष्य होना चाहिए । सत्संग तथा भगवान ये दोनो तीनो गुण से परे हैं । अन्य ब्रह्मांड का सुख तीनो गुण से युक्त एवं नाशवंत है । प्रहलाद तथा प्रियव्रत जैसे राजा सत्संग करके जन्म-मरण के बन्धन से छूट गये । सत्संग मात्र से व्यक्ति विनय रहित हो जाता है । सत्संग कल्पवृक्ष के समान है । सत्संग का द्रोह करने से सुकृत का नाश होता है । सत्संग का द्रोह करने से वृक्ष, घास या पत्थर होना पडता है । इसलिए हरिभक्तों को चाहिए की शुद्ध हृदय से संतो का सत्संग करे । जिससे मायिक पदार्थों की रुचि कम हो और भगवत् भक्ति का उद्रेक हो । संत तथा सत्शास्त्रों का अभ्यास करने से सत्संग का नाश नहीं होता । संत की सभा में जो बैठकर अभ्यास करे तो ही सत्संग का ख्याल आयेगा । सत्संग करने में हित है । कुसंग करने में अहित है । नितिमान लोग सत्संग करके सुखी होते है । सत्संग के योग से जिसे ज्ञान होता है वह लक्ष चौरासी के बन्धन से छूट जाता है । पुत्र परिवार सभी मन के अनुसार मिल सकता है लेकिन सत्संग तथा भगवान का मिलना बडा कठिन है । जिसे यह बात समझ में आ गयी है उसे करोडों की सम्पत्ति भी निष्प्रयोजन लगती है ।

सत्संग, श्रीहरि तथा संत तो चिन्तामणी एवं कल्पवृक्ष से कई गुना अधिक है । इनकी महिमा अपार है । सत्संग तथा श्रीहरि के साथ जितना निष्कपट संबन्ध तथा विश्वास रहता हैं उतना उत्तम हरिभक्त कहलाता है । शास्त्र तथा विद्वान सत्पुरुष ये दोनो सत्संग के द्वार हैं । सत्संग के पुष्टि से भगवान की पुष्टि होती है । सत्संग का मन, कर्म, वचन से जब तक सेवन नहीं होगा तबतक सत्संग का गुण नहीं आ सकता है । सत्संग से मोक्ष सुलभ होता है । प्राकृत लोगों को सत्संग करने में शर्म आती है । दूसरे कर्म में शर्म नहीं आती । सत्संगस्मी चिंतामणी की महिमा जिसे समझ मेंनहीं आती वह बाल बुद्धि कहा जायेगा । मनुष्य का तन चिंतामणी के समान है ।

श्रीहरि कहते - कल्याण के प्रावह के लिए नियम की एक सडक बनाकर सभी शास्त्रों का सार स्म मोक्ष पारायण स्म वचन उसमें हम जडदिये हैं तथा उसी मे विघ्नरुप कुमार्ग को भी बता दिये हैं । सत्संग स्म सडक को बनाया है उसी पर चलते रहना, जब तक ब्रह्मांड है तब तक यह प्रवाह चलता रहेगा । महाराज कहते - सत्संग में हम आये उससे पहले चार बर्ष सोरठ में थे । लोज में १० महीने तक मुक्त मुनि के साथ थे । उनकी मन-वचन से सेवा की । बाद में अन्य तीर्थों में विचरण करते रहे । हमे सभी तीर्थो का फल स्म सत्संग मिला है । हम सत्संग को चिंतामणी मानते हैं । हमारा जैसा भाव था वैसा सत्संग मिला ।

सत्संग के विना लक्षचौरासी का बन्धन टूटने वाला नहीं है । जन्ममरण का दु:ख मिटता नहीं है । सत्संग में इसलोक परलोक का सुख समाया हुआ है । सत्संग की वृद्धि के लिये

संत है । अपने संप्रदाय का प्रारम्भ आत्मानंद स्वामी ने किया । रामानंद स्वामीने उसका पोषण किया । जिसमें श्रीहरिने वात स्त्री धन का खर्च किया और मोक्ष स्त्री मार्ग को खोल दिया । सत्संग में मात्र सुख ही सुख है । अन्यत्र दुःख ही दुःख है । जो सत्संग करते हैं उनका दोष भगवान माफ करते हैं । चक्र वर्ती का राज्य मिले तो भी दुःख का अंत नहीं आता है । ब्रह्मांड के राज्य की अपेक्षा सत्संग में कोटि गुना सुख हैं।

मुक्त मुनि कहते - सत्संग में जो त्यागी हैं इनके जैसा ब्रह्मांड में कुछ भी नहीं है । ब्रह्मांड के भूषण स्त्र हैं । भूषण में भूषण सत्संग है । उसका भूषण संत है । सतं के भूषण भगवान हैं । इसलिए भगवान का वचन सर्वोपरि कहा जायेगा । मनमुखी जो वर्तन करे उसे दुःख होता है । सत्संग के अनुस्त्र जो वर्तन नहीं करे वह त्यागी होकर भी त्यागी नहीं है । जो अपने भीतर दोष देखे दूसरे में गुण देखे तो उसके दुःख दूर होते हैं और सत्संग में दृढता आती है । संत समागम तथा सत्संग में सत्यासत्य का विवेक समझा जाता है जिससे अंतर शुद्धि होती है । जोबन पगी सत्संग में आने से ही दुःख से रहित हो गया, अपनी चोरी-छोड दी दूसरे को भी चोरी छुडवा दिया दूसरे भी अन्न-वस्त्र से सुखी हो गये । महाराज ने वचन दिया है कि हमारे सत्संगी को कभी अन्न-वस्त्रादि की कमी नहीं होगी निष्कपट होकर जिसने सत्संग किया चाहे वह ब्राह्मण रहा हो या चांडाल सभी को भगवान का दर्शन हुआ था । चाहे कुकर्मी हो सत्संग तथा भगवान एवं संत का पक्ष रखेगा तो अन्न, वस्त्र, धन की भगवान कभी कमी नहीं आने देंगे । सुरियाणा के वणिक हेमराज शाह सत्संगी हुए । उससे पहले भी वैष्णव थे और वैष्णव समाज के अग्रसर थे । वे सत्संग को सर्वोपरि मानते थे । सत्संग विना ब्रह्मा जैसे लोगों को भी आत्मज्ञान संभव नहीं है ।

जिसमें जैसा गुण दिखाई देता है उसी की तरफ वह आ कृष्ट होता है । लेकिन सत्संग की तरफ दौडता नहीं है । मोक्षमार्गी जन तो सदा सत्संग में दौडते रहते है । सत्संग करने वाले की कोई जगत में प्रसंशा नहीं करता । क्योंकि व्यसनी लोगों को सत्संग अच्छा नहीं लगता, वे लोग व्यसन में ही डूबे रहते हैं । मनमाने ढंग का व्यवहार उनका होता है - इसी से पतन होता है । बडे भाग्य से यह सत्संग प्राप्त हुआ है । ऐसा अवतार, ऐसा संत समागम भक्तों को कभी मिला नहीं होगा । जिसने ऐसे सत्संग का लाभ नही लिया उसके जैसा दुर्भागी कोई नहीं है । सत्संग की महिमा का सत्शास्त्रों द्वारा प्रतिपादन किया गया है । विवेक विना सभी बाते व्यर्थ हैं । विवेक फल यह है कि उसे सत्संग के सिवाय अन्यत्र भाव नहीं रहता । जो सम्प्रदाय तथा मतपंथी धन तथा नारी में ही अपार सुख मानते हैं, वे भवसागर में भटकते रहते हैं । सत्संग से ही सत्-असत् का विवेक होता है । सत्संग करने वाले की सहायता यमदूत भी करते हैं । काल, माया, कर्म, यमदूत ये सभी अनंत ब्रह्मांड का नाश करनेवाले हैं। इस बात को जो सत्संगी है वे जानते हैं । सत्संग के विना अन्य को समझ मेंनही आयेगा ।

सत्संग का फल भगवान का धाम है । सत्संग में चोरी, परस्त्रि, दारु, मांस, अफीम, हुक्का इत्यादि वस्तुओं का त्याग करके भगवान में प्रेम करने की बात की है ।

भगवान की कथा कीर्तन का व्यसन करने को कहा है । बुरे मार्ग का परित्याग, करने को कहा है । सत्संग में धर्म का संबंन्ध है । धर्म का त्याग करे तो कोई संबंध नहीं रखेगा । नारी-धनादिक में सुख माना जाता है यह जब तक रहेगा तब तक दुःख का अंत नहीं होगा । ऐसी समझ सत्संग विना ब्रह्मा जैसे को भी कठिन है । सत्संग नावस्त्र है । सत्संग की बात विषय में दुःख दिखाती है तथा भगवान में सुख दिखाती है । अनंत शरीर धारी को विषय में जीव लगा रहता है । फिर भी सत्संग के विना उसमें असचि हुई

नहीं । सत्संग का परित्याग कभी करना नहीं चाहिए । सत्संग में दु:ख आवे तो भी सत्संग का परित्याग नहीं करना चाहिए । सत्संग विना वेद पुराण का पढना व्यर्थ ही है । जो सत्संग करते हैं - वे वेदपुराण पढ़े या न पढें उनके सभी साधन पूरे हो गये । सत्संग करने वाला भगवान के धाम में जाता है और वहाँ की सुख समृद्धि को प्राप्त करता है । यह सत्संग दिव्य है । इनकी सभी बातें चमत्कारिक हैं । सत्संग की प्रथा जैसी प्रथा अन्यत्र कहीं नहीं है । सत्संग का द्रोह करने वाले को यहीं फल मिल जाता है । सत्संग द्रोही चाहे कितना बड़ाहो उसके वंश का उच्छेद हो जाता है । सत्संग का जितना सत्कार होगा उनता सुख मिलेगा । सत्संग के प्रताप का पार नहीं है । यह सत्संग स्वी भगवान सर्व श्रेष्ठ है । जिस में भगवान की प्रसन्नता भरी हुई है । जिसमें भगवान अखंडस्प से निवास करते हैं । जिसे सत्संग का, संत का साहचर्य मिल गया है । उसे करोडो यज्ञ का फल मिल गया ।

उद्धव जी भगवान की महिमा समझते थे लेकिन उस से अधिक महिमा सत्संग की है । सत्संग की सभी बातें जन्म मरण से दूर करने वाली हैं । श्रीहरि में ही चित्त रहे यही सत्संग की महिमा है । जिसे सत्संग में रुचि हो उसके अनन्त जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं । मृत्यु को दूर करने का एक मात्र साधन सत्संग है । ब्रह्मांड का अपार वैभव विघ्न देने वाला है, मृत्यु का कारण है । ऐसा जानकर जो सत्संग करे उसे सत्संगी कहते हैं । नाम मात्र सत्संग से मायिक सुख मिलता है । स्त्री-पुरुष सभी सत्संगियो के लिए संत और मंदिर है । इनकी सेवा जो भाव से करे वह श्रीहरि के धाम में जाता है । सत्संग पर जितना भाव हो उतना ही श्रीहरि अंतर में सुख देते हैं । श्रीहरि चरित्रामृत सागर ग्रन्थ के आधार पर इस लेख में सत्संग महिमा के वाक्य अपने इष्टदेव श्रीहरि के हैं । इसके अलांवा दूसरे शास्त्रों का आधार लेकर सत्संग की महिमा को लिखा जाय तो पार नहीं आयेगा । श्रीजी स्थापित सत्संग में श्रीजी महाराज सदा प्रत्यक्ष रहते हैं । इसीलिए तो अपना सत्संग भी प्रत्यश्र हैं । सत्संग की महिमा भी प्रगट है ।

अपने इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान सर्वोपरि हैं । स्वामिनारायण भगवान द्वारा स्थापित नरनारायणदेव, लक्ष्मीनारायणदेव, दोनो देश के धर्मवंशी आचार्यश्री तथा मूल संप्रदाय के संत तथा शास्त्र सभी सर्वोपरि हैं । अपना भागवत धर्म सर्वोपरि है । इसीलिए सत्संग सर्वोपरि है । भाग्य से ये सभी योग समन्वित हुए हैं । इसलिए सत्संगी होने के नाते सत्संग करना और दूसरे से कराना चाहिए, जिससे महाराज तथा प.पू. महाराजश्री हमारे ऊपर प्रसन्न होकर सुखिया होने का आशीर्वाद दें इसके साथ श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

पृष्ठ ८ से आगे

सच्चा सुख सत्संग के अपनेपन में हैं

उनसे श्रीजी महाराज ने बताया कि "यहाँ एक धर्मशाला बनाने की जरुरत हैं । तुरन्त ही जीवा खाचर ने कहा कि इस तरह तो कितने ही आते और जाते हैं । इनके लिये क्या धर्मशाला बनाने की जरुरत ? इस बात को दादा खाचर सुन रहे थे और कहा, महाराज इस समय बरसात हो रही है अभी तो धर्मशाला नहीं बन सकती लेकिन बाद में बनवादेंगे । महाराज से कहा अभी इन राहदारियों के लिए अपने दरबार की जगह में आश्रय दिया जाय तो आप प्रसन्न हैं न ?"

तब श्रीजी महाराज खूब प्रसन्न होकर जीवा खाचर से कहने लगे कि देखे न, इसी लिए हम दादा..... दादा ..... मेरे दादा बार-बार कहते रहते हैं । इनमें और आपके स्वभाव में यही अंतर है । सेवा आप भी करते है, ये भी करते हैं ले किन स्वभाव में फर्क हैं ।

इसलिए जो स्वभाव में परिवर्तन करे वही श्रीहरि को प्यारा है । वही श्रीहरि की प्रसन्नता प्राप्त कर सकता है । इसीलिए सच्चे सुख को प्राप्त करने के लिए सत्संग में सहकार स्वभाव बदलना है और श्रीजी महाराज को भजना है ।

रसनेन्द्रिय को जीतना

- विद्यार्थी साधु भक्तिकिशोरदास (जेतलपुर-संस्कृत पाठशाला)

कलियुगका जीव अपनी आत्मा के कल्याणार्थ इधर उधर भटकता रहता है। परंतु वह अपनी इन्द्रियों को जीतता नहीं हैं । इसलिये उसका कल्याण होता नहीं है । भगवान स्वामिनारायणने शिक्षापत्री के १८९ वें श्लोक में कहा है -

सर्वे इन्द्रयाणिजेयानि रसना तु विशेषतः ।
न द्रव्य संग्रहः कार्यः कारणीयो न केनचित् ।

सभी इन्द्रियों को जीतना लेकिन रसनेन्द्रिय को विशेष रूप से जीतना चाहिए । क्योंकि रसेन्द्रिय के जीतने से सभी इन्द्रिया अपने आप वश में होजाती हैं ।

सामान्य ढंग से इन्द्रियों को कैसे जीता जा सकता है ? यदि इन्द्रियों को जीतना है तो विचार एवं विवेक से जीत सकते हैं । इन्द्रियों का धर्म ही है कि वे अपने विषय में प्रवृत्त हों। लेकिन मनुष्य को चाहिए कि ज्ञान- विवेक विचार द्वारा इन्द्रियों के साथ मन को जीते । इन्द्रियों की वृत्ति का धीरे-धीरे प्रत्याहार करते रहना चाहिए ।

यहाँ रसनेन्द्रिय की चर्चा कर रहे हैं। रसना अर्थात् जिह्वा इस जिह्वा सम्बन्धित स्वाद को जीतना । स.गु. शतानंद स्वामी कहते हैं कि - जितं सर्वं जिते रसे" जिसने रस जीता वह सबकुछ जीत लिया । रसना इन्द्रिय को किस प्रकार जीतना ? जिस समय जो मिले वही खाकर संतोष करने से रसनेन्द्रिय पर अंकुश हो सकता है । यदि स्वाद के लिए खाना है तो स्वास्थ्य भी बिगडेगा, आलस्य भी आयेगा । प्रायः सभी लोग स्वाद के लिए खाते पीते हैं । कितने लोग तो खाने के लिये जीते है, कुछ ही लोग जीने के लिए खाते हैं ।

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि इन्द्रियों के अनुसार जो उन्हे आहार न दे तो विषय से निवृत्त होती है । इसलिए तो उपवास में इन्द्रियां ढीली पडजाती हैं । क्योंकि आहार मात्रा से कम मिलता है । भगवान का दर्शन ही रस से निवृत्ति में सहायक होता है । जब भगवान की महिमा समझ में आजाय तो इन्द्रियों को अपने विषय में राग नहीं रहता है ।

निष्कुलानंद स्वामी ने भक्ति चिन्तामणी के १०८ वें प्रकरण में कहा है कि -

पंच इन्द्रियनुं पोषण स्वाद पंड्या
पोषता वधे प्रमाद
स्वाद माहि रह्या बहु शूल स्वाद दे
सर्व प्रमाद पापनुं मूल ।

अर्थात् पंचेन्द्रियों का पोषण स्वाद है । जिसे पुष्ट करने वाली जीभ या प्रमाद है । स्वाद के भीतर कंटक होता है । जो स्वाद है वह पाप का मूल है ।

श्रीहरिलीलामृत के ५वें कलश में ११ वें विश्राम में लिखा है -

रहे रसास्वाद नी वासनाय,
ते तो किडा ते रसनाज थाय ।
त्रिः स्वादी पामो सर्वे नरनारी,
भविष्य नु दुःख दिले विचारी ॥

अर्थात् - यदि रसास्वाद की वासना रहजाय तो वह जीते हुए रसका कीडा बनता है । इस लिएमेरे आश्रित नरनारी भविष्य का विचार करके निःस्वादी बने ।

श्रीजी महाराज ने वचनामृत में प्रत्येक स्थल पर इन्द्रियों को जीतने का उपाय बताया है । महाराज गढडा के मध्य प्रकरण में १६ वें वचनामृत में कहते है कि "जिसे जो स्वादवाला भोजन प्रिय हो उस में पानी डालकर जिमे तथा युक्ताहार करे तो बडी सरलता से रसना को जीता जा सकता है ।

सभी शास्त्रों का, सभी विद्वानों का एक ही मत है कि रसास्वाद के अधीन नहीं होना चाहिए जिहवा के अनुकूल उसे आहार नहीं देना चाहिए ।

भगवान स्वामिनारायणने सत्संगि जीवन ग्रन्थ के ९९ वे अध्याय में रसास्वाद रूपी दोष को जीतने का उपाय बताया है ।

परोपकार

- विद्यार्थी साधु चैतन्यस्वरुपदास गुरु पी.पी. स्वामी
(जेतलपुर-संस्कृत पाठशाला)

जो मनुष्य स्वउदर पूर्ति के लिए जीता है वह वृथ्वी पर भार स्वरुप ही है - एक कवि ने लिखा है -

जब तुम आयेजग में, जग हंसे तुम रोय ।
ऐसी करनी कर चलो, तुम हंसो जग रोय ॥

आपका जब जन्म हुआ तब आपके माता-पिता तथा अन्य सम्बन्धी प्रसन्न थे । ऐसी करनी आप करो कि जिससे सारा जगत आपके न रहने पर आपको याद कर सके । न रहने पर लोग रोयें ।

जो मनुष्य देह से द्रव्य से, वाणी से, बुद्धि से परोपकार नहीं करते वे बडे होकर भी तृण के समान तुच्छ ही हैं । स्कन्द पुराण में लिखा हैं -

परिनिर्मण्य वागवालं निर्णीत मिदमेव हि ।
नोप कारात्परोधर्मोनापकारादधं परम् ॥

सभी शास्त्रों का मन्थन करने से सार यह निकला कि परोपकार से अधिक पुण्य तथा अपकार से अधिक कोई पाप नहीं है । इसलिए परोपकारी होना चाहिए ।

परोपकारी पुरुष में अगाध शक्ति होती है । जिसे मात्र ज्ञानी ही देख सकते हैं । जैसे विजली के करंटवाले तार को विद्युतमैन ही जान सकता है कि इसमें विद्युत है या नहीं और कितने शक्ति की है । जिससे चारो तरफ प्रकाश सम्भव है बडे बडे यन्त्र इसी से संचालित होते हैं । विजली के विना तार मोटा दिखाई देता है लेकिन उस में विद्युत संचार होता नहीं है जिससे वह कुछ कर सकता नही । इसी प्रकार परोपकारी मनुष्य दूसरे के जैसा दिखाई देता होगा तो भी उसमें अगाध शक्ति भरी होगी । जो दिखाई नहीं देती है । परोपकार से मनुष्य बस में कर सकता है । इसलिए अपना जीवन परोपकार मय होना चाहिए । किसी कविने लिखा है -

मणी के काया मानवनी जगत मां धूप-सळी थाजो ।
सुगन्धी अन्य ने देवा, तमे जाते बणी जाजो ॥

हमे यह सुन्दर शरीर मीली है तोइसे अगरबती जैसे महकती बनाना । जो दूसरे को सुगन्ध ही देती रहती है । अपनी शरीर का उपयोग केवल परोपकार के लिए होना चाहिए .

इस जगत में सभी पदार्थो से प्रेरणा लेनी चाहिए । जैसे वृक्ष, नदी, गाय हमें प्रेरणा देती है -

परोपकाराय फलन्तिवृक्षाः
परोपकाराय वहन्ति नद्यः ।
परोपकाराय दुहन्ति गावः
परोपकारार्थमिदं शरीरम् ।

वृक्ष परोपकार के लिए फलते हैं, नदी परोपकार के लिए बहती है, गाय-परोपकार के लिए दूध देती हैं । यह शरीर भी परोपकार के लिए है । वृक्ष स्वयं ताप को सहते हैं लेकिन दूसरो को छाया देते है । कोई पत्थर मारे तो भी उसे वे फल ही देते हैं । नदी परोपकार के लिए ही बहती है, कोई उनकी पूजा करे तो भी खुश, उसमें गन्दकी डाले तो भी खुश, किसी पर नाराज होने का प्रश्न ही नहीं है । मनुष्य को इन सभी से सीख लेना चाहिए । गाय भी परोपकार के लिए ही दूध देती हैं । अपने भोजन के लिए बाघ गाय को मारडालता है । जब कि मनुष्य गाय को पालता है । बालक अपनी मां का दूध पीता है, इस प्रकार जो जिसका दूध पीता वहमां होती है । वृक्ष, नदी, गाय, इन तीनो से हमे प्रेरणा लेनी चाहिए कि हमारी शरीर परोपकार के लिए है - सन्त तुलसीदास कहते ।

तस्वर सरोवर, संत जन चौथा वरसे मेह ।
परमारथ के कारणे चारो धरियो देह ॥

पशु के चमडे का जूता बनता है । जब कि मनुष्य के चमडे का कुछ भी नही बनता । यदि मनुष्य अपनी देह को परोपकार के लिए बनादे तो

वह नर से नारायण हो जायेगा ।

एक वन मेंएक बडा बट वृक्ष था । उस वृक्ष पर अनेक पक्षियों के घोषले थे । सभी पक्षी दिन में चारा चूगने दूर-दूर जाते कलरव करते आनन्द करते । संयोगवश एकबार उस बन में दावानल लग गया । सारी बनराई जलने लगी । फिरभी उस वृक्ष पर बैठे सभी पक्षी निर्भय थे । उस में से कुछ उमरदार पक्षियों ने कहा कि भगवान ने तुम लोगो को पंख दिया है, उडजाओ अन्यथा इस वडवाग्नि में जल जाओगे । तब पक्षियों ने कहा -

दाहजले डुंगर जले, जले सब बनराई ।
हम जले तुम कां जलो, हमारे पांखो नाई ॥

बट दादा आज तक हम आपके ऊपर घोषला बनाकर रहे, आपके फल को खाये, आपकी छत्रछाया में बढे, पले, पुष्ट हुए, अब जब आप पर आपदा आई तो हम सभी आप को छोड़कर उड जाय तो हमारे जीवन को धिक्कार है । आपके साथ आज तक सुख को भोगे तो आपके साथ दु:ख भी भोगेगे । पक्षियों की हिंमत एवं परोपकारी वृत्ति देखकर प्रभु को दया आयी, या प्रभु की कृपा से दावानल धीमा हो गया । सभी प्रसन्न हो गये । वृक्ष पर बुजुर्गो ने जो उपदेश दिये थे वे ठन्डे पड गये । अपकार का बदला उपकार से दे वह मनुष्य ही इस कलियुग में उपकारी होता है ।

वचनामृत ग.प्र. ४ का सारांश

पृष्ठ ५ से आगे

अपनी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए ।

"शरीर मां सेग नो प्रेवश मानवीने रोवडावे छे,
मनमां अहंनो प्रवेश मानवीने रखवाडे छे.
हृदयमां प्रसंशानो प्रवेश मानवीने हार खवडावे छे

पटरानियों ने रादजी को ऐसी युक्ति शिखाई थी कि भगवान प्रसन्न हो जाय । जीवन में मूल्यों के आचरण से, धर्म से, श्रीहरि की प्रसन्नता से ही यह संभव है । आत्मप्रसंशा से प्रगति बाधित होती है । "ईर्ष्या करनी हो तो नारद जैसी करनी चाहिए" महाराज ने यह बात इस लिए कही है कि जैसे दीमक वस्तु को भीतर से खोखला कर देते हैं वैसे ही ईर्ष्या भी व्यक्ति को खोखला कर देती है ।

जिसके हृदय में मान हो उस मान से ईर्ष्या उत्पन्न होती है । क्रोध, मत्सर, अनसूया भी उसी से उत्पन्न होते है । संक्षेप में अपने से बडे का सन्मान जो न देख सके उसे ईर्ष्या कहते हैं ।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर ये शरीर के शत्रु हैं । ईर्ष्या, अहंकार तथा देहाभिमान भी अंत:शत्रु हैं । ये सभी जिसके पास हैं वे अपने कार्य कभी सिद्ध नहीं कर सकते ।

जिस में ईर्ष्या का भाव होता है वह देख नहीं सकता, आंख होते हुए भी अन्धा है ।

ईर्ष्या व्यक्ति को छोटा बना देती है । ईर्ष्यालु तथा अहंकारी के मन में कृतज्ञता नहीं रहती । ईर्ष्या पाप की मूल है । ईर्ष्यालु व्यक्ति बहुत घमंटी होता है, वह जगत में अपने को सर्व श्रेष्ठ मानता है ।

ईर्ष्या अन्दर में जलती सूक्ष्म आग है । ईर्ष्या की ज्वाला इतनी भयंकर है कि उस में जो पडा । वह जलकर राख हो जाता है । ईर्ष्या के कारण ही मंथरा के कहने पर कैकेयीने राम को वनवास दिलवाया था ।

अंतर की ईर्ष्याग्नि को बुझाने का एक ही मार्ग है वह है प्रेमस्त्री जल । लेकिन यह प्रेम स्त्री अमृतजल को हमें पहचानना होगा । यह परम पवित्र जल है "सत्संग" । सत्संग द्वारा मन का मैल धुल जाता है । संत तुलसीदासजीने कहा है -

कंचन तजवो सहज है
सहज प्रिया को स्नेह ।
मान बडाई ईर्ष्या,
तुलसी दुर्लभ एह ॥

सत्संग जागृति
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

नित्य याद स्वने योग्य बात

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

वांचने एवं विचारने योग्य यह बात है। मनन तथा जीवन में उतारने योग्य भी है।

एक दिन स्वामिनारायण भगवान अक्षरदालान में विराजमान थे। अगल बगल में कोई संत नहीं थे। केवल थोडे हरिभक्त बैठे हुए थे। वे कैसे थे तो प्रेमानंद स्वामी के शब्दों में कहे तो "पासे हरिजन रे बैठा होय मन गमता" भगवान को भी अनुकूल तथा मन के अनुकुल भक्त होते हैं। अपना नाम किस लिस्ट में है यह देखना चाहिए। अनुकूल वाले में है तो ठीक मन के अनुकूल होगा तो उससे भी उत्तम, लेकिन प्रतिकूल वाली लिस्ट में नाम नही आना चाहिए। इसका ध्यान रखना आवश्यक है।

प्रभु के पास दादा खाचर, सुराखाचर, सोमला खाचर मातरा धाधल, मांचा खाचर इत्यादि मन के अनुकूल भक्त बैठे थे आज प्रभु को कुछ अनोखी बात कहने की इच्छा हुई। सबसे प्यारे भक्त दादा खाचर से प्रभु ने पूछा, दादा खाचर! हा, प्रभु ! दास के लिए क्या आज्ञा है ? आज्ञा तो कुछ विशेष नहीं लेकिन आप को किस संत में विशेष प्रेम है बतायेंगे ? हाँ, प्रभु ! सत्य कहिए तो मुझे मुक्तानंद स्वामी के साथ प्रेम है। मैं इन्हीं के पास विशेष बैठता हूँ।

बाद में प्रभु ने सुराखाचर से पूछा, सुराखाचर ? आप को किस संत के साथ प्रेम है। तब सुरा खाचर ने कहाँ, प्रभु ? आप तो जानते हैं कि मैं ब्रह्मानंद स्वामी के साथ प्रेम करता हूँ। मुझे इनके साथ बैठने में चर्चा में मन लगता है। बाद में सोमला खाचर से प्रभु ने पूछा, सोमलाखाचर ! आपको किस संत से अधिक प्रेम है। प्रभु ! हमें तो नित्यानंद स्वामी के साथ प्रेम है।

इस प्रकार स्वामिनारायण भगवान जैसे इन्टरव्यू ले रहे हो सभी आत्मीय भक्तों से पूछने लगे। सभी का उत्तर सुनकर काफी प्रसन्न हुए। सभी भक्त अपने-अपने परीक्षा मे उत्तीर्ण हो गये।

अंत में मातरा धाधल से प्रभुने पूछा, आपके किस संत के साथ प्रेम है ? तब मातरा धाधल ने भी सभी भक्तों की तरह कहा प्रभु ! मुझे निर्विकल्पानंद स्वामी के साथ प्रेम है। प्रभु सुनकर तुरत सभी के सुनते हुए कहा कि यह ठीक नहीं क्योंकि आपका हाथ तो अच्छे भोजन को छोडकर खराब में पड गया। प्रभु के ऐसे वचन सुनकर सभी पूछने लगे कि आप ऐसा क्यों कह रहे हैं ? तब श्रीहरिने कहा कि मातरा धाधल का जिसके साथ प्रेम है उसका स्वयं का ठिकाना नहीं है, स्थिरता नहीं, निश्चय नहीं, वफादारी नहीं, तो उसका संग करने वाला अच्छी बात कैसे कह सकता है।

प्रिय भक्तों ! अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण ने उपदेश के लिए यह चरित्र करके बाद में सत्संग में सभी के लिए उपयोगी ऐसी विचारणा की है कि हे भक्तों ! समस्त सत्संग अपना कुटुम्ब है। सभी संत आपस में सद्भाव रखना। जितना हो सके सेवा करना। यदि आप अपना श्रेय चाहते हों तो पवित्र संत का संबंध रखना। उन्हीं के पास से हित की बात सुनना। उनके कहने पर अपने जीवन की धारा बनाना तभी सत्संग में स्थिर हो सकोगे। "जैसा संग वैसा रंग" यह अपनी पुरानी कहावत है। ऐसा कहकर महाप्रभु भक्तों को उचित मार्ग दर्शन किया कि हे

भक्तों ! संग परख कर ही करना । प्रभु की यह बात सुनकर सभी भक्त खूब प्रसन्न हो गये ।

प्रिय भक्तों ! कैसी सुन्दर बात है । हमें भी ध्यान रखना है कि हम कैसा संग करें । इसलिए संग की शुद्धि, निर्दोष की बुद्धि रखना । यह बात शांति से विचार कर किसी अच्छे संत के साथ प्रेमरखना हितावह है । जिस प्रकार रामानंद स्वामी ने कहवाया था कि इस सत्संग में रहना हो तो खंभे को गले लगाना होगा । यह शब्द सुनने के साथ नीलकंठ वर्णीने खंभे को गले लगा लिया, उस समय मयाराम भट्टने स्पष्टीकरण किया कि खंभे को गले लगाने का मतलब मुक्तानंद स्वामी जैसा कहे वैसा ही करना । इस समय के वातावरण मेंयह वात समझने लायक है ।

•

दया धन की मूल है

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

महाभारत की यह बात है । पांडवो ने राजसूय यज्ञ किया । पहले के राजा ऐसी बडी-बडी यज्ञ करते । आज तो यह यज्ञ शक्य ही नहीं है । कारण यह कि "राजन की रीति गई मंत्री की प्रतीति गयी" आज ऐसे राजा मिलने दुर्लभ है । आज उस मसय जैसा यज्ञ कराने का किसी को समय ही नहीं है । आज ऐसे यज्ञों की विधि कम ही पंडितों को ज्ञात होगी । ऐसी बडी यज्ञ का कार्यभार पांडवो ने लिया । राजा संसकारी हो तो प्रजा को उत्तम संस्कार दे सकता है । प्रजा को सुखी कर सकता है । इस यज्ञ की सेवा में पांडवो के साथ साथ कौरव भी जुड़े हुए थे । श्रीकृष्ण भगवान की इच्छा भी थी कि इस यज्ञ में मैं भी रहूँ और बडी व्यवस्था को उन्हों ने स्वीकार किया । जिसकी व्यवस्था स्वयं भगवान सम्हालें उसमें क्या कमी ।

श्रीकृष्ण भगवानने इस यज्ञ में आये हुए सभी को कार्यभार सौंप दिया । दुर्योधन को भी इस यज्ञ में कार्यभार सौंपदिया । जो ब्राह्मण इस यज्ञ में आवें उन्हें दक्षिणा देने का कार्य दुर्योधन को दिया । यज्ञशाला की सेवा अर्जुन को दिये । अतिथियों की सेवा का कार्य युधिष्ठिर को दिये । भोजनालय की व्यवस्था भीम को दी । नकुल-सहदेव भी अन्य-अन्य सेवा में भाग लिये । श्रीकृष्ण भगवानने स्वंय अतिथियों की तथा ब्राह्मणों की पत्तल एवं जूठन उठाने का उत्तर दायित्व लिया । स्वयं के आचरण से सभी को उपदेश दिये कि "टहल करने की सेवा मिले तो भाग्य समझना" उत्तम सेवा मिले तो उसका फल कम मिलता है । श्रीकृष्ण भगवानने नीचे की सेवा स्वीकारी । सोना की नगरी में रहने वाले तथा जिसकी सेवा में हजारों दास दासियां होती है, ऐसे राजाधिराज भगवान भी हमारे उपदेश के लिए यह सबकरते थे ।

दुर्योधन पांडव का नुकशान करने के लिए खूब प्रयत्न किया । निश्चित की गयी दक्षिणा से भी अधिक देने लगा फिर भी धन घटता नहीं था । दो तीन गुना अधिक ही हो गया । भूदेव पांडवो को खूब हृदय से आशीर्वाद देते । युधिष्ठिर राजा थे तो भी जो सेवा कार्य मिला था उसके सिवाय कोई अन्य कार्य नहीं करते । अर्जुन ब्राह्मणो के लिए यज्ञ में उत्तम व्यवस्था करते । इस प्रकार सभी लोग अपनी कर्तव्य निष्ठा को व्यवस्थित करते धीरे-धीरे यज्ञ का समय पूरा होने आया । प्रतिदिन ब्राह्मणों अतिथियों का भोजन समारंभ होता, सभी आनंद से भोजन जिमते अंतिम दिन सभी ब्राह्मण अतिथि, नगरजन भोजन करके चले गये बाद में अच्छी तरह यज्ञ पूर्ण हुआ या नहीं इसके लिए अंत में शंखनाद होता । जहाँ बैठकर सभी लोग भोजन करते वहाँ उच्च आसन पर शंख रखी जाती, सभी के भोजनपूर्ण होने पर शंख में से स्वयं शंखनाद होता, यह सत्कार्य पूर्ण हुआ या नहीं उसकी सफलता के लिए, या पूर्णता के लिए शंख में

से स्वयं नाद होता । लेकिन आज तो शंख में शंख ध्वनि हुई नहीं । तब पांडव भगवान श्रीकृष्ण से कहे कि हे प्रभु ! अतिथि ब्राह्मण, नगरजन सभी भोजन कर लिये, लेकिन शंख ध्वनि तो हुई ही नहीं । श्रीकृष्ण भगवान ने तुरंत ही कहा कि इस समय जल्दी से खोज करो कि किसी को अन्न की जरूरत है । कोई भूखा रहगया होगा । भगवान ने भीम को यह कार्य सौंप दिया कि खोज करके ले आओ । भीम नगर के भीतर खोज करने निकले जहाँ जाते वहाँ जोर से चिल्लाते हुए आवाज करते कि कोई यज्ञ नारायण का प्रसाद लेने में अवशिष्ट तो नहीं है ? घूमते हुए भीम नदी के किनारे आये, वहाँ एक भिक्षुक बैठा था । भीम नजदीक जाकर पूछे, अरे तुम भोजन किया ? तुम को पता है कि पाण्डवो के राजसूय यज्ञ का अंतिम दिन है । प्रसाद लिया कि नहीं ? तब भिक्षुक ने कहा कि पाण्डवों को जरूरत होगी तो यहाँ भोजन कराने आयेंगे । हमें वहाँ जिमने नहीं आना, तो तूं यहाँ पडा रह भूखे, कोई खाली नहीं है जो तेरे लिए यहाँ भोजन लेआए । शंख बाजे या न बाजे । बाद में भीम वापस जाकर यह बात भगवान श्रीकृष्ण को बताई । श्रीकृष्ण भगवान ने तुरंत ही भीम से कहा कि हे भीम भोजन कराने वाले से भोजन करने वाला बड़ा होता है । इस समय गरज हमारी है, इसलिए जाकर माफी मांगो और उसे भोजन कराओ । बाद में भीम भोजन की थाली लेकर जाते है और भिक्षुक से माफी मांगकर जिमाते हैं । वहाँ तो आश्चर्य हो गया भिक्षुक की जगह पर साक्षात् धर्मदेव भीम के माथे पर कोमल हाथ फेरने लगे । उसी समय शंख ध्वनि हुई । आनंद की लहर फैल गयी ।

मित्रो ! यह प्रसंग ऐसी शिक्षा देता है कि जब बडा प्रसंग करना हो तब छोटे व्यक्ति को भी नहीं भूल जाना चाहिए । यथार्थत जिन्हे अन्न की जरूरत है, उन्हें पूर्ण करने के बाद ही यज्ञ की पूर्णता है ।

स्वामिनारायण भगवान की भी ऐसी दयालु भावना थी । जब ये भोजन करते उस समय कोई आजाता और वह भूखा हो तो अपनी थाल उसे भेंट कर देते । इसी लिए प्रेमानंद स्वामीने प्रभु की प्रकृति के विषय में लिखा है -

कोई ने दुखियो रे, देखी न खमाय दया आणी रे ।
अति अकळा थाय, अन्नधन वस्त्र रे आपी ने दुःखटाणे ॥

सत्संगियो को सूचना

स्वामिनारायण संप्रदाय के सभी सत्संगियों को ज्ञातव्य हो कि उत्तर विभाग श्री नरनारायणदेव देश के मूली श्री स्वामिनारायणमंदिर के त्यागी शास्त्री लक्ष्मीनारायणदास गुरु स्वामी लक्ष्मीप्रसादासजी तथा स्वा. घनश्यामप्रकाशदास गुरु शा. लक्ष्मीनारायणदास, स्वामी अक्षरप्रकाशदास गुरु लक्ष्मीनारायणदास का वर्तन तथा व्यवहार संप्रदाय के विरुद्ध होने के कारण तथा आचार्य महाराजश्री तथा सत्शास्त्रों की मर्यादा का उल्लंधन करने के कारण मूली मंदिर के त्यागी पंच तथा अहमदाबाद मंदिर के त्यागी पंच ने सर्वानुमत से विमुख कर दिया है । जिससे प.पू.ध.धु. आचार्य श्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अपने हाजिरी क्रमांक नं. २३/०५-०६ से विमुख धोषित किया है । जिससे संप्रदाय के दोनो देश में किसी भी मंदिर में या संस्था में रखना या रखवाना नहीं है । (विमुख होने से वे साधु, पार्षद या हरिभक्त की गिन्ती में नही आते हैं ।)

- आज्ञा से महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबादमें शशिक्षापत्री भाष्य की त्रिदिनात्मक पारायण हुई

सर्वोपरि श्री नरनारायण देव के शुभ सानिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी शा. निर्गुणदासजी के मार्गदर्शन से अ.नि. प.भ. नाथजीभाई इच्छाराम शुक्ल और प.भ. ईश्वरलाल लाभशंकरभाई पंड्या की दिव्य प्रेरणा से प.भ. बाबुलाल मणीलाल शाह (प्रांतीजवाले) परिवार की तरफ से दि. १८-११-०५ से २०-११-०५ पर्यन्त ''श्री शिक्षापत्री भाष्य'' की त्रिदिनात्मक पारायण पुराणी स्वामी श्री घनश्याम चरणदासजी के वक्ता के रूप में संपन्न हुई थी। प्रसादी के दिव्य सभामंडप में यजमान परिवार और कथा प्रेमी भक्तो ने सुंबह-शाम तीन दिन देव दर्शन, आचार्य दर्शन और कथा श्रवण का लाभ लेकर धन्य हुए थे। दि. २०-११-०५ को पूर्णाहुति के दिन प.पू. बडे महाराजश्री और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सभा में पधारे थे। और व्यासपीठ का पूजनअर्चन कर पूर्णाहुति की आरती की थी । यजमान परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन कर आरती उथार कर भेट रख कर आशीर्वाद प्राप्त किए थे । इस अवशर पर पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन से कोठारी स्वामीने सुंदर व्यवस्था की थी ।

- कोठारी साधु धर्मप्रकाशदास

जेतलपुर श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय में शरदोत्सव धामधुमसे मनाया गया

सर्वोपरि तीर्थधाम जेतलपुर में श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय (वाडी) में दि. ९-१०-०५ से १२-१०-०५ पर्यन्त शरदोत्सव का भव्य आयोजन किया गया था ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से इस प्रसंग के उपलक्ष्य में संचालकश्री शास्त्री स्वामी हरिॐप्रकाशदा तथा पाठशाला के प्रधानाचार्यश्री के मार्गदर्शन से सुंदर हिमालय दर्शन तथा गीरनार दर्शन का आयोजन किया गया था ।

इस शरदोत्सव का उद्घाटन तथा विद्यार्थी संत, पार्षद और भूदेव को आशीर्वाद देने के लिए श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य श्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसाद महाराजश्री संत-मंडल के साथ पधारे थे । तब विद्यार्थी संतोने सुंदर स्वागत गीत तथा वैदिक मंगलाचरण किए थे । तत्पश्चात् विद्यार्थीने अपनी भाषा में सुंदर प्रवचन किया था । उसके बाद प्रधानाचार्य डॉ. वाचस्पति मिश्रने संस्कृत में अपने विचार व्यक्त किए थे । अंत में विद्यार्थी संत, पार्षद और भूदेवो को आशीर्वाद दिए थे । इस अवसर पर पू. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदास पू. पी.पी. स्वामी, मंहत के.पी. स्वामी और अमहादाबद मंदिर के महंत स्वामी के प्रतिनीधी खास उपस्थित रहे थे । अंत में आभार विधि शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजीने की थी ।-

विद्यार्थी साधु चैतन्यस्वरूपदास, जेतलपुर वाडी

गोमतीपुर मंदिर में तुलसी विवाह मनाया गया

श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतीपुर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कार्तिक सुद-११ को धामधुम से तुवसी विवाह किया गया था । बहनों ने भगवान के संतो द्वारा रचित लग्न के गीत गाये । बडी संख्या में हरिभक्तों ने तुलसी विवाह के दर्शन का लाभ लिया । हरिकृष्ण महाराज की मूर्ति को सुंदर ढंग से श्रृंगार करके सभी को दर्शन का लाभ दिया गया । -

कोठारीश्री

श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वामी हरिवल्लभदासजी के मार्ग दर्शन में दीपावली के नूतन वर्ष में ठाकुरजी का अन्नकूट आदि प्रसंग धूमधाम से मनाया गया था । कष्टभंजन देव के सांनिध्य में सत्संग डायरा रखा गया था । जिस में श्री धवलभाई सोनी तथा श्री दिनेशभाई वधाशीयाने सुंदर लाभ दिया ।

- महेन्द्र भगत

वणझार (सरखेज) मंदिर में पाटोत्सव संपन्न

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा में कार्तिक शुक्ल पंचमी को ठाकुरजी का पाटोत्सव स्वा. स्वयंप्रकाशदासजी की प्रेरणा से धूमधाम से सम्पन्न किया गया । प्रातः महापूजा, अभिषेक, अन्नकूट तथा आरती का लाभ प.भ. ठक्कर राजुभाई, प्रकाशभाई तथा नीतिनभाई ने लिया । सायंकाल जीवराजपार्क मंदिर से श्री नरनारायणदेव युवक मंडळ ने धुनि, कीर्तन, भजन का सुंदर कार्यक्रम किया ।

- कोठारी रमणभाई

बापूपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में तुलसी विवाह सम्पन्न

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में बापुपुरा महिला मंडळ द्वारा कार्तिक शुक्ल १२ रविवार ता. १३-११-०५ के दिन तुलसी विवाह का सुंदर आयोजन किया गया था । चराडा से श्रीहरि की विवाह यात्रा बापुपुरा आयी । धूमधाम से जिसका स्वागत किया गया । बहनो ने सुंदर राग में विवाहो चित गीत गाये । सभी आनंदित हुए । सम्पूर्ण गाँव भक्ति रस में डूब गया । सम्पूर्ण गाँव की तरफ से यह आयोजन किया गया था । सभी इसका लाभ लेकर धन्य हो गये । -

को. जेशंगभाई सेवाभाई चौधरी, भगाभाई रेवाभाई - संचालक

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ डांगरवा गाँव में तळपद तथा वांटा में सत्संग की सुन्दर प्रवृत्ति चल रही है। यहाँ के मंदिर में भाद्र मास में ४८ घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुनि का आयोजन किया गया था। डांगरवा से मूली श्री राधाकृष्णदेव की पदयात्रा हरिभक्तों ने निकाली थी। दोनो मंदिर में शरदोत्सव रास खेली गयी थी।

- डाभी मफाजी सरदारजी

महुन्द्रा गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

प.पू. बडे महाराजश्री तेजन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा वर्तमान आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से गांधीनगर जिले के महून्द्रा गाँव में शा. हरिजीवनदासजी के मार्गदर्शन में तथा स्वंय सेवा के फल स्वरूप गाँव में नरनारायणदेव गादी के अन्तर्गत नूतनमंदिर बनाया गया। मनुभाई माधाभाई पटेल परिवार ने भूमिदान किया था। यहाँ केवल दो सत्संगी परिवार द्वारा मंदिर का कार्य पूर्ण हो गया।

मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रसंग पर श्रीमद्भागवत पंचाहन पारायण का आयोजन किया गया था। वक्तापद पर शा. हरिजीवनदासजी स्वयं बिराजमान थे। तीन दिन का विष्णुयाग सम्पन्न हुआ। इस गाँव में प्रथमवार पूज्य महाराजश्री पधारे थे। उत्सव समारंभ में सम्पूर्ण गाँव एकत्रित था। पांच हजार जितने हरिभक्त बाहर से आये हुए थे। १८-११-०५ कार्तिक शुक्ल ३ के दिन महाराजश्री के वरद हाथो सें मूर्ति प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। समाप्ति पर श्रीफल का होम किया गया। उत्सव में सहयोगी संत अहमदाबाद मंदिर के महंतश्री, सोकली, ईडर, जेतलपुर, नारायणघाट, नारायणपुरा, भुज, हिंमतनगर इत्यादि धामों से संत प्रारसंगिक प्रवचन आकर किये थे। जिनकी प्रेरणा से श्री गणपतिजी, श्री हनुमानजी की मूर्तियों की प्रतिष्ठा हुई थी ऐसे वयोवृद्ध संत हरि नारायण स्वामीका पू. महाराजश्री ने बहुमान किया। गाँव के विस्तार में सत्संग तथा मंदिर की आवश्यकता का ध्यान रखकर पूज्य महाराजश्री ने मंदिर निर्माण कर्ता शास्त्रीजी को खूब आशीर्वाद दिया था। इस प्रकार सत्संग में वृद्धि करते रहने को सभी को सीख दिये। महोत्सव में लेईवाला भक्ति स्वामी के मार्गदर्शन तथा बिलिया के स्वा. चन्द्रप्रकाश के सभा संचालन से उत्सव उत्तम ढंग से सम्पन्न हुआ था। *- को. बाबूभाई एस. पटेल*

दहेगाव श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर (टेबलाफळी) में नूतन वर्ष के शुभदिन ठाकुरजी को अ.सौ. हंसाबहन हर्षदभाई पटेल की तरफ से अन्नकूट का भोग लगाया गया था। हजारों हरिभक्त दर्शन का लाभ लिये थे। धन्यता का अनुभव किये थे।

- को. अरविंदभाई अमीन

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

सुरेन्द्रनगर में स्वामिनारायण मंदिर का भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

सुरेन्द्रनगर शहर के मध्य में मूली श्री राधाकृष्णदेव देश के अंतर्गत का प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से स.गु. स्वामी ब्रह्मानंद के शिष्यपरंपरा के स.गु. महंत स्वामी हरिनारायणदासजी स्वामी के मंडल के स्वामी योगेश्वरदासजी की प्रसन्नता से मूली के स.गु. प्रेमजीवनदासजी स्वामी के भजन-भक्ति सेवाश्रम से खूब रमणीय वंशी पहाणपुर (राजस्थान० के गुलाबी पत्थर का नव्य भव्य कलात्मक पांच शिखरों वाला श्री स्वामिनारायण मंदिर निर्मित हुआ। जिस में अलग-अलग डिझाईन की ४२ छत ४२ स्तंभ १ खंभे में २४ स्मोवाला २० खंभा २२x२२ कोर काचलावाल तथा २४ अवतारों की मूर्तियाँ, रमणीय शिखर, संगमरमर का चौखट, २०० से अधिक देव देवता, संतो के स्म भी समाविष्ट हैं। जिस की लंबाई १०५x७०, उंचाई ७८ फूट है। मंदिर के मध्य में श्रीहरिकृष्ण महाराज, श्री राधाकृष्णदेव तथा बांई तरफ श्री नरनारायणदेव, दाहिनी तरफ श्री बालस्वस्म घनश्याम महाराज, एक शिखर में विघ्न विनायक देव, शंकर-पार्वती तथा एक शिखर में श्री कष्टभंजन देव विराजमान है। जिन देवों की मूर्ति प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य महाजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम से संपन्न की गयी थी। ता. ११-११-०५ से १७-११-०५ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन की कथा का पारायण का आयोजन किया गया था। जिस के वक्ता स.गु.शा. स्वा. श्रीजीप्रकाशदास तथा शा. सत्यस्वस्मदासजीने कथामृत का पान कराया था। जिस में प्रतिदिन १ घंटे व्याख्यान माला का भी आयोजन किया गाय था। जिस के वक्ता स.गु.पु.स्वा. रामकृष्णदास थे। साथ ही पांचदिन का हरियाग भी किया गया था। ५१ कुंडी में १७५ यजमान भाग लिए थे। भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभु के जीवन कवन तथा सदाचार इत्यादि का युवकों द्वारा स्वयं पेईन्टींग करके चित्रों का प्रदर्शन किया गया था। सुरेन्द्रनगर शहर में आज तक भूतो न भविष्यति जैसी भव्य शोभायात्रा ठाकुरजी की निकाली गयी थी। जिस में पू. महाराजश्री तथा लालजी महाराजश्री विराजमान थे। इस के साथ सर्व रोग निदान केम्प का योजन किया गया था। शहेर के नामांकित ४० डॉक्टर सेवा कार्य किये जिमें १४५० जितने दर्दी आये थे। ब्लडकेम्प द्वारा ८८ से भी अधिक बोटल ब्लड के एकत्रित किये गये थे।

ता. ११-११-०५ से १७-११-०५ तक ग्राउन्ड में भोजन कार्य सदाव्रत चलता ही रहा। प्रतिदिन अलग-अलग पकवान का भोजन होता था। सात दिन तक २३५००० से भी अधिक लोग प्रसाद ग्रहण किये।

यह उत्सव उत्तम ढंग से मनाया गया था। जिस में प.पू. निवृत्ताचार्य महाराजश्री देखकर खूब प्रसन्न होकर प्रेमस्वरूप स्वामी को हार्दिक आशीर्वाद दिये। प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवाला एवं प.पू. बडी गादीवाला पधारकर मूर्तियों को देखकर खूब प्रसन्न हुई। इस मंदिर का निर्माण कार्य ८ वर्ष तक चला इस समग्र उत्सव के मुख्य यजमान अ.नि.सां.यो. बा की शिश्या कमला बा तथा कोकिला बा एवं उषा बा थी। इस मंदिर के निर्माण में अंदाजित ३ करोड रुपये खर्च हुए। श्री कृष्ण भगवान की मूर्ति की यजमान तथा १ सुवर्ण सिंहासन की भी सेवा की थी, इस कार्य में बहनों द्वारा सेवा का विशेष योगदान था। श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण के यजमान प.भ. कानजीभाई हरजीभाई वरसाणी सामाया कच्छ वाले थे जिन्होंने श्रीगणपतिजी की मूर्ति तथा मंदिरकी देहली की भी सेवा की थी।

श्री नरनारायणदेव भगवान की मूर्ति के यजमान लक्ष्मणभाई राधवाणी तथा कानजीभाई राधवाणी, प्रेमजीभाई राधवाणी वणदिया वाले थे। श्री नर भगवान की मूर्ति के यजमान अ.नि. मोहनभाई पानाचंद भाई गांदी (धांगध्रावाले) थे। पंचधातु की श्रीहरिकृष्ण महाराजकी मूर्ति के यजमान प.भ. परबतभाई कानजीभाई हीराणी भारासर (कच्छ) थे। तथा बाल स्वरूप घनश्याम महाराज की मूर्ति के यजमान अनंतराय मणीलाल धोळकिया परिवार के साथ रंजनबहन धोळकिया थी। श्री राधिकाजी माता की मूर्ति के यजमान श्री गुणवंतलाल त्र्यंबकलाल कामदार परिवार भावनगर, अरविंदभाई तथा संतोषभाई डाह्याभाई थे। श्री कष्टभंजनदेव मूर्ति के यजमान श्री खजीभाई मेघजीभाई वेकरिया वणदिया वाले थे।

इस प्रसंग पर संहिता पाठ का आयोजन भी किया गया था। इसके साथ प्रति रात्रि में ८-३० से ११-३० तक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया था। इश प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. निर्गुणदादासजी तथा भू.पू. छपैया के महंत स्वामी, भुज से स.गु. प्रेमप्रकाशदासजी तथा मूली के महंत स्वा. नरेन्द्रप्रसादजी पधारे हुए थे। मूली अहमदाबाद, वडताल, जूनागढ, जेतलपुर, गढडा, धोलेरा, भुज इत्यादि धामो में संत पधारे हुए थे। भुज, अमहादाबाद देश के सभी सांख्ययोगी बहन पधारी हुई थी। सभा का संचालन शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी ने किया। इस कार्यक्रम में अनेक ज्ञाताज्ञात संत हरिभक्तोंने सेवा का कार्य किया। मूली देश के सभी गाँव से श्री नरनारायणदेव युवक मंडळ भाई एवं बहनोने स्वयं सेवक के रूप में खूब निष्ठापूर्वक सेवा का कार्य किया।

मूली निवासी हरिकृष्ण महाराज तथा पू. महाराजश्री की कृपा से निर्विध्न यह कार्य पूर्ण हुआ। तन, मन, धन से सेवा करने वाले सभी का सुरेन्द्रनगर में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज मंगल करें एसी प्रार्थना। इस समग्र उत्सव का संचालन शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी तथा शा.स्वा. सत्यस्वरूपदासजी के नेतृत्व में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल सुरेन्द्रनगर द्वारा सम्पन्न हुआ। *- शैलेन्द्रसिंह झाला*

स.गु. देवानंद स्वामी के जन्मस्थल बलोल (भाल) के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा धूमधाम से संपन्न हुई

श्री नरनारायणदेव देश के मूली श्री राधाकृष्ण देव ताबा के कवि सम्राट स.गु. देवानंद स्वामी के जन्म स्थान बळोल के नवनिर्मित स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. महाराजश्री तथा वर्तमान पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवं आशीर्वाद से दोनो मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण होने के बाद मूर्ति प्रतिष्ठा का भव्य आयोजन किया गया था।

ता. ९-११-०५ प्रारंभ दिन ही दीप प्राकट्य के अवशर पर अमदाबाद मंदिर के महंत शा. स्वा.निर्गुणदासजी, भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी मूली के बाल कृष्णदासजी, स्वा. हरिकेशवदासजी के प्रातःकालीन वक्तापद पर तथा सायंकालीन वक्ताओं में शा.स्वा. ज्ञानवल्लभदासजी, शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी, शा.स्वा. घनश्यामदासजी, पू. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी थे। जिन्होंने अपने अमृतवाणी से सभी को आनंदित किया था। संहितापाठ के वक्ता ब्र. सूर्यप्रकाशानंदजी थे। सभासंचालन शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी ने किया। उत्सव के पांचो दिन तक भजन तथा भोजन की उत्तम व्यवस्था की गयी थी। जिसका आयोजन गाँव की तरफ से किया गया था सम्पूर्ण महोत्सव का आयोजन प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मूली मंदिर के महंत स्वामी लक्ष्मीप्रसाददासजी सेवक वनराजभगत तथा नाथद्वारा के महंत स्वामी धर्मस्वरूपदासजीने श्रध्धा भक्ति से किया। उत्सव में विष्णुयाग, महापूजा, विप्र बटुकों की यज्ञोवित विधि, रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया था।

ता. १३-११-०५ कार्तिक शुक्ल १२ के दिन प्रातः ८ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे उस समय गाँव के बाहर अभूतपूर्व स्वागत किया गया था, जिस में हजारो भक्त एवं संत सामिल थे। बळोल गाँव के इतिहास में ऐसा उत्सव कभी नहीं हुआ था। गाँव के भावुक भक्तों ने श्रध्दा भक्ति से सवा की थी। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने भाईयों तथा बहनो के दोनों मंदिरो में प्रतिष्ठा वेद विधि से की थी। यज्ञ तथा महापूजा इत्यादि की पूर्णाहुति करके सभा में पधारे थे। जहाँ पर अग्रणी हरिभक्तों ने प.पू.

आचार्य महाराजश्री की आरती उतारी थी। भेंट पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। इसके साथ ही बडे महाराजश्री को म्युजियम के लिए प्रसादी की रजाई भेंट की गयी थी। बाद में पूर्णाहुति करके बळोल गाँव के भाग्य का पार नहीं था। प.पू.ध.धु. महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री जब सभा में विराजमान हुए उस समय बहनो को आशीर्वाद देने के लिए लक्ष्मीस्वरूपा दोनो गादीवाली भी पधारी थी। इस प्रकार बळोल गाँव धर्मकुल परिवार के चरणरज से धन्य हो गया।

इस प्रसंग पर भाजप प्रदेश प्रमुख श्री वजुभाई वाळा श्री किरिटसिंह राणा (लिंबडी) तथा लींबडी के धारा सभ्य श्री भवानभाई भरवाड दर्शन करने पधारे थे।

इस प्रकार पर अनेक संत महंत तथा गाँवों के भक्त, देश विदेश से भी हरिभक्त यथायोग्य सेवा करके धन्य भागी बने थे। अहमदाबद मंदिरके महंत शा.स्वा. निर्गुणदासजी, जेतलपुर के पू.पी.पी. स्वामी, धोलका के महंत स्वामी, मूली के महंत स्वामी, शा.पूर्णप्रकाशदासजी स्वा. चन्द्रप्रकाशदासजी इत्यादि संतो ने खूब सहयोग दिया था।

श्रीहरि के दोनो अपर स्वरूपो ने सभी गाँव वासीजन को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। - *करशनभाई सिंधव*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

शिकागो (I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में पदयात्रा तथा पू. महाराजश्रीका प्राकट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया

मीडवेस्ट श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो में अपने दोनो प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी कृपा से सत्संग उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त है।

यहाँ भादपद शुक्ल १५ को मंदिर के कार्यकरोने पदयात्रा का आयोजन किया था। मंदिर से करीब ५ कि.मी. दूर से प्रातः ७-०० बजे पदयात्रा का शुभारंभ श्री स्वामिनारायण भगवान, श्री नरनारायणदेव तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की जयनाद से सारा आकाश गूंज उठा था। हरिभक्त-भाई-बहन तथा सिकागो अपने मंदिर के महंत स्वा. धर्मवल्लभदासजी इत्यादि संत पदयात्रा में भाग लिये थे। एक सत्संगी बहन एक अपने ६ महीने के बालक को लेकर पदयात्रा में आयी हुई थी। उसे देखकर सभी को बडा आश्चर्य होता था। पदयात्रा में सैंकडो भावुक भक्त श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुनी बोलते हुए मंदिर तक पदयात्रा को पूर्ण किये थे। सभी पदयात्री मंदिर में श्रृंगार आरती का दर्शन करके खूब धन्यता का अनुभव किये थे।

सर्वोपरि श्रीहरि के अंतर्ध्यान की तिथि के निमित्त सायंकाल धुनि, कीर्तन, कथा तथा प्रसाद वितरण का आयोजन किया गया था। यहाँ के हरिभक्तों के सहकार से पश्चिम देश में श्री स्वामिनारायण भगवान की विशेष भजन भक्ति हो रही है। विशेष तो यह कि प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सभी सरल हो गया है।

शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के प्राकट्योत्सव को शिकागो के हजारों हरिभक्तोंने धूमधाम से आनन्द उल्लास के साथ मनाया।

आज के शुभ मंगलमय दिन भजन, कीर्तन, धुनि के साथ सभा प्रारम्भ की गयी थी। शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजीने स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित पुरुषोत्तमप्रकाश की कथा द्वारा धर्मकुल महिमा आचार्य महिमा, आचार्य द्वारा ही मंत्रदीक्षा की महिमा को सविस्तार समझाये थे। यहाँ के प्रमुखश्री जगदीशभाईने (I.S.S.O.) यहाँ के विकाश की बात की थी। आज का दिन अति भव्य था। पूजारी स्वामीने श्रीहरिकृष्ण महाराज को आचार्यश्री का पोषाक पहनाकर उत्सव को और सुन्दर बना दिया था। आरती, नित्य नियम के बाद सभी को भोजन की व्यवस्था की गयी थी। भाईयों तथा बहनों की सेवा प्रेरणा रही थी। - *घनश्यामभाई कवि, विष्णुभाई सोलावाला*

श्री स्वामिनारायण मंदिर फ्लोरिडा (I.S.S.O.)

फ्लोरिडा (I.S.S.O.) स्टेट के लेकलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर में १६ अक्टूम्बर रविवार को सभी हरिभक्तों ने मिलकर शरदोत्सव प.पू. आचार्य महाराजश्री के जन्मोत्सव के रूप में धूमधाम से मनाया।

यहाँ पूजा सेवा करते हुए शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजीके मार्गदर्शन में सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री की प्रतिमा को चन्दन पुष्प से अर्चित करके आरती पूजा प.भ. अरविंदभाई पटेल (करजीसणवाला) ने की थी। इसके साथ शरदपूर्णिमा के प्रसंग पर ठाकुरजी को केशर-शक्कर युक्त चिउडा का भोग लगाकर हरिभक्त रास किये थए।

शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजीने श्रीमद्भागवत रासपंचाध्यायी का कथामृत पान कराया था। साथ में धर्मकुल माहात्म्य तथा अपने गुरु आचार्य महाराजश्री की महिमा का सविस्तार वर्णन किया था। अंत में सभी को दूध चिउडाका भोगा वितरित कियाग या था। - *नीतिनभाई पटेल*

डिट्रोईट (I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रथम पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा पू. स्वामी देवप्रकाशदासजी (स्कीम कमेटी के सभ्य) की प्रेरणा से प.भ. डॉ. मनोजभाई जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट तथा उनकी माता गं.स्व. जसुबा परिवार की तरफ से डिट्रोईट मंदिर का प्रथम पाटोत्सव धूमधाम से सम्पन्न।

१२ सितम्बर का दिन डिट्रोईट के हरि भक्तों के लिए सुहाना था। डिट्रोईट श्री

स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान आदि का प्रथम पाटोत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाजश्री प.पू. बडे महाराजश्री के वरद हाथों से दिव्यता के साथ महाभिषेक सम्पन्न किया गया था । पाटोत्सव के यजमान बहनों के आग्रह पर प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वस्मा दोनो गादीवाला पदार्पण की थीं । बहनों को दर्शन तथा आशीर्वाद का सुख मिला था ।

यजमान परिवार डॉ. मनोजभाई तथा चि. जय की तरफ से ठाकुरजी का अभिषेक, महापूजा, अन्नकूट इत्यादि सम्पन्न हुआ था । यहाँ आरती पूजा करने वाले घनश्याम स्वामी ने ठाकुरजी का सुंदर श्रृंगार करके सभी को दर्शन का लाभ दिया था ।

इस प्रसंग पर प्रेसीडेन्ट डॉ. अरविंदभाई, हिंमतभाई खेर, डॉ. रश्मिवोरा, जगदीशभाई, डॉ. बाबुभाई राठोड, किशनभाई, परदानानी, राजुभाई, रश्मिभाई, सुमनभाई ,जेरी पटेल, अरविंदभाई, विज कीरीट इत्यादि लोग दिव्य लाभ लिये थे ।

पाटोत्सव के उपलक्ष्य में सुप्रसिद्ध कथाकार श्री योगेन्द्रभाई भट्ट के वक्तापद पर पंच दिनात्मक कथा पारायण का आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर कडवा पाटीदार की कुल देवी उमिया माताजी की प्रतिष्ठा धूमधाम से सम्पन्न हुई । पाटोत्सव का लाभ लेने (I.S.S.O.) के प्रत्येक चेप्टर से हरिभक्त पधारे हुए थे । शिकागो से प्रेसीडेन्ट जगदीशभाई, घनश्यामभाई, धीरूभाई, कलिवलेन्ड चेप्टर से प्रकाशभाई, जयंतीभाई, भिखुभाई ठक्कर, हरीशभाई, बाबुभाई कानदास कोठावाला इत्यादी १५०० जितने हरिभक्त भाई बहन पधारे हुए थे । मणीभाई पटेल (सलालवाडा) की तरफ से समस्त हरिभक्तों को भोजन कराया गया था । शनाभाई तथा डी.एम. पटेल ने विष्णुयाग का यजमान पद लिया था । ओहावो से अनिलभाई जयेशभाई, महेन्द्रभाई इत्यादिने दर्शन का लाभ लिया था ।

प्रासंगिक सभा में पू. स्वा. हरिकृष्णदासने सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान तथा श्री नरनारायणदेव की महिमा का सुंदर निरूपण किया था । इसके साथ यजमान परिवार की खूब प्रशंसाकी थी ।

अहमदाबाद के पू. महंत स्वामीने सुंदर वक्तव्य दिया था । पू. महाराजश्री के साथ महंत स्वामी पू.पी.पी. स्वमी (जेतलपुर) सेवक वनराज भगत इत्यादि प्रवास में आये हुए थे । संत हरिभक्तों के प्रवचन बाद पूज्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

प.पू. बडे महाराजश्री का दिव्य संकल्प "श्री स्वामिनारायण म्युझियम" के निर्माण कार्य में अनेक हरिभक्तों ने सेवा भेट दी थी । शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा देव स्वामी "श्री स्वामिनारायण म्युजियम" की सेवा प्रवृत्ति में (I.S.S.O.) के प्रत्येक चेप्टरों में घूमकर सुंदर सेवा का कार्य किया था । डिट्रोईट मंदिर में उत्सवका दर्शन करके भक्तजन खूब प्रसन्न हुए थे ।

भोजनालय की व्यवस्था में रसिकभाई, योगेशभाी, निरंजनभाई, जगदीशभाई, राजुभाई तथा कांतिभाई, बहनो में धर्मिष्ठाबहन, गीताबहन, शारदा बहन, मयूरीबहन, सविताबहन, इत्यादिने सुन्दर सेवा की थी । *- योगी स्वामी गु.स्वा. हरिकृष्णदासजी - डिट्रोईट*

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अहमदाबाद (बापूनगर) : प.भ. मगनभाई शामजीभाई डोबरिया ता. १६-१०-०५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

नेत्रामणी (ता. ईडर) : प.भ. करशनभाई कुबेरभाई पटेल (लेउवा पाटीदार समाज के प्रमुख तथा अग्रणी सत्संगी) ता. ६-११-०५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

खेरोल (तलोद) : श्री स्वामिनारायण मंदिर के पुजारी प.भ. कांतिभाई रणछोडभाई पटेल ता. १६-११-०५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

डुंगरी (ईडर) : श्री गोपालभाई रेवाभाई पटेल (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल सभ्य) की माता श्री धुलीबहन ता. २५-१०-२००५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासी हुई है ।

लुणावाडा : प.भ. उपेन्द्रभाई मूलजीभाई देरासरी (मंदिर के ट्रस्टी) ता. २६-१०-२००५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अहमदाबाद : प.भ. अनंतप्रसाद जवेरलाल पंड्या ता. २-११-०५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अहमदाबाद : प.भ. नंदलालभाई भायचंदभाई कोठारी (भालजा मंडल) के बडे भाई प.भ. चीमनभाई भायचंदभाई कोठारी ता. १६-११-०५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

साबरमती-अहमदाबाद : प.भ. नटवरलाल मफतलाल पटेल के युवान पुत्र चि. पराक २३ वर्ष की उम्र में अक्षरनिवासी हुए हैं ।

दशगाम लेउवा पाटीदार अग्रणी श्री शामळभाई मरघाभाई पेटल श्रीहरिका अखंड स्मरण कते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।



महुद्रा (जि. गांधीनगर) नूतन मंदिर की प्रतिष्ठा यज्ञ विधि में विराजमान पू. आचार्य महाराजश्री के साथ महंत स्वामी तथा मंदिर निर्माण करने वाले शा. हरिजीवनदासजी ।



कांकरिया मंदिर में मासंति यज्ञ में पूर्णाहुति करते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ।



आदि आचार्य पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा प्रतिष्ठित (स्वामिनारायण बाग असारवा, गुरुकुल) धर्मकुल के कुलदेवता श्री हनुमानजी महाराज के मंदिरका जीर्णोद्धार की पूजन विधि करके सभा में विराजमान प.पू. बडे महाराजश्री ।



सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सन्मुक प्रबोधिनी एकादशी व नरनारायणदेव उत्सवीय मंडल में सहजता से सभी के सा विराजमान होकर दर्शन देते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।





श्री स्वामिनारायण म्युजियम के निर्माण कार्य के प्रगति की एक झलक ।



बळोल भाल श्री स्वामिनारायण मंदिर मे ठाकुरजी का प्राण प्रतिष्ठा की आरती करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ।



बळोल भाल श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर सभा में श्रीहरि के तीनो अपर स्वरूप दर्शन देते हुए ।



